चन्दामामा
दिसम्बर १९७९

* कार्बोक्सिलीय एसिड ग्रुप का फार्मूला, जो दांतों के इनेमल को नष्ट करके, दांतों में दर्दनाक खोखले बनाता है.

चन्दामामा-कैमल रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

इनाम जीतिए

कैमल-पहला इनाम १५ रु.
कैमल-दूसरा इनाम १० रु.
कैमल-तीसरा इनाम ५ रु.
कैमल-आश्वासन इनाम ५
कैमल-सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामिल हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहें कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए P.B. No. 9928, COLABA, Bombay-400 005.

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

Name.. Age.................

Address..

कृपया अपना नाम और पता अंग्रेज़ी में लिखिए।

CONTEST NO.12

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: *31-12-1979*

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 10 (Hindi)

1st Prize: Darshan Natvarlal Jani, Ahmedabad-380 001. *2nd Prize:* KU. Kalpana Khangan, Bilaspur. *3rd Prize:* Master S. S. Sahoo, Bhubanesar-751 004. *Consolation Prizes:* Palwandersingh, Amritsar; Devandra Apte, Coloney Ratlam, Pin: 457 001; Atul Prakash Batra, New Delhi-58; Ku. Janifer Baptist, Chachai, Pin: 484 220; Uttamchand Rawat, Meogaffar Nagar (U.P.).

मधुर स्मृतियाँ जगाए

MORTON

जीवन का माधुर्य सिमटा है—मॉर्टन की मिठाईयों में
बच्चों और बूढ़ों को बराबर पसन्द आने वाली
प्यारी-प्यारी, याद आने वाली — मॉर्टन

डीलक्स टाफी, मॉर्टन कुकीज़, लैक्टो बोन-बोन, डाइजेस्टिव मिन्ट, मिनी पॉप, कोकोनट् क्रंच, पाइन् एप्पल क्रीम एवं दूसरी सॉफ्ट-सेन्टर्ड किस्म की मिठाईयाँ

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्टस फैक्ट्री
(भूतपूर्व स्वामी : सी० एण्ड ई० मॉर्टन (इण्डिया) लि०
प्रो० : अपर गैंजेज शूगर मिल्स लि०
पंजीकृत कार्यालय : ६/१, आर०एन० मुखर्जी रोड, कलकत्ता ७०० ००१
फैक्ट्री : मढ़ौरा, जिला सारन, बिहार

CC/M-2/79 HIN

• **BOMBAY :** (1) Akbarally's (2) India's Hobby Centre (3) Bombay Toys • **BANGALORE :** (1) Universal Electronics (2) Kanchan Radio Corpn. • **BILASPUR :** Shyam General Stores • **COCHIN :** Components & Devices • **CALICUT :** (1) Naik Electricals (2) Radio Centre • **COIMBATORE :** Union Trading Co. • **CANNANORE :** Sunder Radio Co. • **CALCUTTA :** (1) Railton Electronics (2) India's Hobby Centre **GUNTUR :** Appolo Electronics • **GAUHATI :** Paul Bros. • **HUBLI :** Gokhale Agencies • **HYDERABAD :** General Musical Mart • **JAIPUR :** Airking Electronic • **KAKINADA :** P. S. N. Murthy & Co. • **KOTTAYAM :** (1) Moni & Co. (2) J. J. Electronics • **MANGALORE :** Manohar Radio House • **MADRAS :** Crown Electronics • **MYSORE :** Ashok Electronics • **MADURAI :** 1) Universal Traders (2) Ramdas Radio Spares • **NAGERCOIL :** Sunder Radio Co. • **POONA :** (1) King Electronics (2) Solar Radios (3) Trio Electronics • **QUILON :** Mony's Radio Services • **RANCHI :** Jayant Agencies • **TRICHY :** (1) Khani Radio (2) Radio Centre • **VISHAKHAPATNAM :** Radio Home • **VIJAYAWADA :** Savit Electronics.

वेटो कंपनी, बम्बई • कलकत्ता • मद्रास

Sona 31 HI

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "असफल व्यापार" है। प्राचीन काल में वैश्य जाति के लोग खेतीबाड़ी और मवेशीपालन किया करते थे। उस समय की सभ्यता में आर्थिक साधन ये दो ही रहें। समाज में अन्य उत्पादनों के बढ़ने के बाद वे व्यापार करने लग गये जिससे उनके प्रारंभिक पेशे अन्य वर्णों के हाथों में चले गये।

अमर वाणी

अत्यल्प मपि साधूनां शिलालेखेव तिष्ठति,
जल लेखेव नीचानां यत् कृतं तत् विनश्यति ॥

[उत्तम व्यक्ति छोटे से भी कार्य करते हैं, वे स्थाई रह जाते हैं; लेकिन नीच व्यक्तियों के काम पानी पर लिखे गये अक्षरों की भांति उसी वक्त मिट जाते हैं।]

वर्ष : ३२ | दिसंबर १९७९ | अंक : ४

प्रश्नोत्तर

प्रश्न : दूध शाकाहार है या मांसाहर?

उत्तर : जब आहार का विभाजन वृक्ष संबंधी तथा जंतु संबंधी के रूप में किया जाता है, तब दूध जंतु संबंधी हो जाते हैं। पर ऐसा न होकर, आहार को हिंसा द्वारा अथवा अहिंसा के द्वारा प्राप्त बांटा जाता है, तब दूध अहिंसा द्वारा प्राप्त आहार ही माना जाएगा। हमारे देश में अपने को शाकाहारी बतानेवाले लोग हिंसा का ही आचरण करते हैं। उनकी दृष्टि में दूध, मक्खन, घी, मलाई, दही जैसी चीजें शाकाहार के अंतर्गत मानी जाती हैं। कुछ लोग मुर्गी आदि के अण्डों को शाकाहार ही बताते हैं। कारण उनमें जंतु सहज अंगों का निर्माण, नसें, रक्त प्रसार वगैरह नहीं होते। लेकिन अमेरिका में अपने को "वेजिटेरियन्स" माननेवाले किसी भी जंतु से संबंधित आहार का स्पर्श तक नहीं करते, आखिर लिवर एक्स्ट्राकट को दवा के रूप में सेवन करनेवाला भी उनकी दृष्टि में "वेजिटेरियन" नहीं होता। उन लोगों ने गांधीजी तथा बेर्नार्ड शा को वेजिटेरियन के रूप में मानने में इनकार किया था।

प्र. : बुद्ध अहिंसावादी हैं, फिर भी बौद्धों में अधिक लोग मांसाहारी हैं, ऐसा क्यों? बुद्ध स्वयं मांसाहार का सेवन कर रोग के शिकार हो कैसे मृत्यु को प्राप्त हुए?

उ. : बौद्ध धर्म ने शाकाहार का प्रचार नहीं किया, केवल अहिंसा का ही प्रचार किया। श्रीलंका, बर्मा, चीन, जापान, इंडोचाइना, कोरिया वगैरह देशों में आज भी बौद्ध धर्म का अस्तित्व है। पर उन देशों के बौद्ध नियमानुसार कभी शाकाहारी नहीं रहे। लेकिन बौद्धों को जीवहिंसा नहीं करनी है, जानवरों का वध नहीं करना है। बुद्ध के जन्मजात शत्रु देवदत्त ने अपने कुछ नियमों को स्वीकृत करने का बुद्ध से निवेदन किया। उनमें एक नियम बौद्धों का शाकाहारी होना है। इसे बुद्ध ने नहीं माना। क्योंकि बौद्ध भिक्षा माँगते हैं। इसलिए बुद्ध ने बताया कि उन्हें भिक्षा देनेवालों को शाकाहारी बन जाने का आदेश देने का अधिकार नहीं है। हमारे देश में शाकाहार का प्रचार करनेवाले लोग जैन हैं। जहाँ जैनों का प्रभाव नहीं है—काश्मीर में जैसे—ब्राह्मण भी मांसाहारी हैं।

अपरीक्षित कारकम्

[७७]

सहस्त्रबुद्धि, शतबुद्धि तथा एक बुद्धि की कहानी सुनकर अतिलोभी ने कहा–"तुम्हारा कहना कदापि सही नहीं है, इसमें विधि का कोई निर्णय नहीं है। पर सच बात यह है कि एक बुद्धि व्यावहारिक ज्ञान रखता था, इसलिए बच निकला। बाक़ी दोनों व्यावहारिक ज्ञान नहीं रखते थे। अधिक आशा के कारण होनेवाले दुष्परिणाम 'बंदर का बदला' नामक कहानी में स्पष्ट हो जाते हैं।" फिर अतिलोभी ने यों सुनाया :

किसी जमाने में चन्द्र नामक एक राजा था। उसके पुत्रों को बन्दरों के साथ खेलने का बड़ा शौक़ था। इस कारण उन बच्चों ने खाने की चीजें खिला-खिलाकर कई बन्दरों को राजमहल के भीतर आकृष्ट किया।

बन्दर खा-खाकर मोटे-ताजे बन गये। उनमें चर्बी चढ़ गई। वे बन्दर स्वेच्छापूर्वक राजमहल में विहार करने लगे। उन बंदरों का सरदार एक बूढ़ा बंदर था, जिसने बृहस्पति, चाणक्य जैसे राजनीति के विशारदों की रचनाएँ पढ़कर मनुष्य और पशुओं की चिकित्सा पद्धतियों में प्रवीणता प्राप्त की।

राजमहल के अहाते में भेड़ों का एक रेवड़ भी था। उन पर छोटे बच्चे सवार करते थे। उनमें एक भेड़ा बड़ा ही पेटू और खाऊ था। वह जब भी मौक़ा मिलता, रसोई घर में घुस जाता, वहाँ की सारी चीजें चाट जाता। रसोइये तंग आते, हाथ में जो भी चीज़ आ जाती, उससे उस भेड़े को मार बैठते थे। चाहे बर्तन हो या जलनेवाली लकड़ी भी क्यों न हो!

इसे देख बन्दरों के सरदार ने यों सोचा–"भेड़ों और रसोइयों के बीच जो तनाव आ गया है, जिससे कभी न कभी बन्दरों के लिए खतरा पैदा हो सकता है! यह भेड़ा स्वादिष्ट भोजन को देख ललचा उठता है। इसे देख रसोइये जो भी चीज हाथ में आयी, उसे लेकर भेड़े को पीट रहे हैं! हो सकता है कि कभी उनके हाथ में जलनेवाली लकड़ी भी आ जाय! जलती लकड़ी से पीटने पर भेड़े का ऊन जल सकता है। वह मारे पीड़ा के घुड़साल के कोने में स्थित अपनी झोंपड़ी में भागकर पुआल में लोट सकता है, पुआल के जलने पर घुड़साल की छत भी जल उठेगी। राजा के अच्छे नस्ल के घोड़े जलकर भस्म हो सकते हैं, कुछ घोड़े रस्से तुड़वाकर भाग सकते हैं। पर उनके शरीर जलने के कारण उन पर छाले पड़ सकते हैं। शालिहोत्र जैसे प्रसिद्ध वैद्य ने बताया है कि घोड़ों के बदन पर जलने से जो छाले पड़ते हैं, उनका सही इलाज बन्दरों को मारकर उनकी चर्बी छालों पर मलना है। कहा गया कि छालों पर बंदर की चर्बी मोटी परत के रूप में मल दे तो उसी वक्त पीड़ा दूर हो जाती है। अपने बढ़िया नस्ल के घोड़े छालों के शिकार होने पर राजा अपने दरबारी पशु चिकित्सक की अवश्य सलाह लेंगे! वे जरूर यही दवा बतायेंगे। राजा के लिए घोड़े ज्यादा क़ीमती हैं, बन्दर नहीं, वे सारे बंदरों को मरवा डालकर उनकी चर्बी निकलवाकर घोड़ों का इलाज करायेंगे। ऐसा एक न एक दिन जरूर हो सकता है। इसलिए मेरी बन्दर जाति की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। इसके वास्ते उचित कार्रवाई पहले ही करना उचित होगा।" यों विचार करके बूढ़े बन्दर ने सभी बन्दरों का सम्मेलन किया और होने वाले खतरे की सूचना देकर यों चेतावनी दी:

"सुनो, इस वक़्त भेड़ों और रसोइयों के बीच जो तनातनी चल रही है, वह मेरे कहे मुताबिक़ हमारे लिए खतरनाक है! जो लोग ज्यादा दिन तक ज़िंदा रहना चाहते हैं, उन्हें इस तरह संघर्ष करनेवालों के बीच नहीं रहना है। संघर्ष के कारण संपन्न राज्य भी भस्म हो जाते हैं। कटु वार्तालाप दीर्घकालीन मैत्री को भी मिटा देता है। अनुचित कार्य अपार यश में भी कलंक पैदा करते हैं। इसलिए मेरा सुझाव है कि खतरा पैदा होने के पहले ही हम लोग अपने जंगल को लौट जायेंगे।"

हित की ये बातें सुन सारे बन्दर हँस पड़े और अपने सरदार से बोले–"बुढ़ापे के कारण तुम्हारा दिमाग सठिया गया है। इसीलिए तुम किन्हीं खतरों की कल्पना करके अर्थहीन सलाह देते हो! हम लोग स्वर्ग जैसे इस प्रदेश को कभी त्याग नहीं सकते। राजकुमारों द्वारा प्राप्त होनेवाले स्वादिष्ट पदार्थों को त्यागकर जंगल के खट्टे, फीके व कड़ुए फल हम कभी नहीं खायेंगे।"

ये बातें सुनने पर बूढ़े बन्दर की आँखों से आँसू आ गये। उसने यों समझाया–"मूर्खो! तुम लोग समझ नहीं पाते हो कि ये सुख क्षणिक हैं। ये स्वादिष्ट पदार्थ ही तुम्हारे प्राणों के लिए हालाहल बन जायेंगे। मैं अपनी आँखों के सामने तुम लोगों को मरते देख नहीं सकता। मैं अभी जंगल में चला जाता हूँ। जो लोग अपने मित्र की दीनता, अपने घरों में शत्रुओं के प्रवेश तथा अपने परिवारों के सर्वनाश होते नहीं देखते, वे धन्य कहलाते हैं।" यों समझाकर बूढ़ा बन्दर अकेले ही जंगल में चला गया।

इसके थोड़े दिन बाद भेड़ा अपनी आदत के मुताबिक़ रसोई में घुस गया और राजा के लिए बनाये गये स्वादिष्ट व्यंजन खाने लगा। रसोई पूरी बनी नहीं थी, चूल्हे पर कुछ और पदार्थ पक रहे थे।

रसोइये भेड़े की इस करनी पर क्रोध में आ गये। उन लोगों ने इधर-उधर ढूंढ़ा कि कहीं कोई लाठी या लोहे की छड़ हाथ में लग जाय, पर कोई चीज जब न मिली, तब चूल्हे में जलनेवाली लकड़ी लेकर भेड़े की पीठ पर जमा दी। फिर क्या था, भेड़े का ऊन जल उठा। वह पीड़ा के मारे मिमियाते घुड़साल के पुआल पर लोटने लगा। पुआल के साथ घुड़साल की छत भी जल गई। कुछ घोड़े वहीं के वहीं मर गये, कुछ की आँखें जाती रहीं, नौकरों ने कुछ घोड़ों को बड़े मुश्किल से मरने से बचाया। मगर उनके बदन जल गये थे। दर्द के मारे हिनहिनाते वे घोड़े सारे अहाते में दौड़ने लगे।

घोड़ों से अत्यधिक प्रेम रखनेवाला राजा उनकी इस बुरी हालत देख दुख से भर उठा। उसने दरबारी पशुचिकित्सक को बुलवाकर पूछा—"वैद्यजी, बताइये! इन घोड़ों की पीड़ा को कम करनेवाला बढ़िया इलाज क्या है? आप मेरे इन प्यारे घोड़ों को हर तरह से बचाने की कोशिश कीजिए।"

वैद्य ने सारे वैद्यग्रंथ उलट-पलटकर देखा और कहा—"महाराज! पशुचिकित्सा के पितामह शालिहोत्र का कहना है कि तत्काल मारे गये बन्दरों की चर्बी घोड़ों के छालों पर मलने से तुरंत पीड़ा कम हो जाएगी। इसलिए हम इसी वक़्त यह इलाज करायेंगे।"

फिर क्या था, राजा ने राजमहल के अहाते में स्थित सभी बन्दरों को मार डालने का आदेश दे दिया।

नौकरों ने बन्दरों को स्वादिष्ट पदार्थ खिलाने के बहाने सबको इकट्ठा किया, उनको मारकर उनकी चर्बी निकाली और घोड़ों के छालों पर लेपन किया।

बूढ़े बन्दर ने जब अपने अनुचरों की मौत की खबर सुनी तब वह दुख के मारे बेहोश हो गया। क्योंकि उन मृत बन्दरों में बूढ़े बन्दर की संतान, उनके बच्चे, रिश्तेदार और बन्धु भी थे।

[१७]

[माया मर्कट मंत्रदण्ड के साथ कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिक के हाथों से बचकर राजधानी पहुँचा। वहाँ पर एक जंगली मदार का भालू माया मर्कट पर हमला कर बैठा। उस समय वहाँ पहरेदारों का सरदार पहुँचा और माया मर्कट को भालू के द्वारा पकड़वाकर राजामहल की ओर चल पड़ा। बाद...]

राजमहल की सीढ़ियों के पास पहरेदारों के सरदार ने तलवार उठाकर अपने पीछे चले आनेवालों को रुक जाने का आदेश दिया, तब उच्च स्वर में मदारी से बोला–"अबे, ऐसा मालूम होता है कि इस वक़्त महाराजा दरबार में हैं। वहाँ पर इस कमबख़्त पालतू भालू को ले जाना उचित नहीं है। इसलिए क्या तुम उसके कंधे पर स्थित बंदर को अपने कंधे पर बदलकर मेरे साथ राजा के पास आ सकते हो?"

मदार ने नाराज़ हो जाने का सा चेहरा बनाकर कहा–"साहब, चाहे तो आप मुझे कुछ भी कहियेगा, मगर मेरे पालतू भालू को कमबख़्त बताते हुए उसका अपमान न कीजियेगा। आप यक़ीन कीजिएगा, उसकी अक़्लमंदी पर कई राजा, सामंत और पंडित भी अचरज

मदारी ने अनिच्छापूर्वक चेहरा बनाया, भालू के पास जाकर उसकी पीठ सहलाते हुए बोला–"मेरे वीर सेवक! अपने कंधों पर से इस कमबख्त बंदर को तुरंत नीचे उतार दो।" यों कहते मदारी ने माया मर्कट की कमर में कसे रस्से को खींचकर पकड़ लिया।

भालू अपने दाढे फैलाकर जोर से चिल्ला उठा, माया मर्कट की कमर पकड़कर उसे नीचे उतारने को हुआ। इस पर मर्कट किचकिच करते नीचे कूद पड़ा, तब बोला–"अबे, तुम्हारी राजधानी को भल्लूक मांत्रिक के जरिये खतरा पैदा होंनेवाला है। तुम्हारे राजा कहाँ पर हैं?"

में आ गये हैं। इस बात का यह सबूत है कि लंका जाने के लिए सेतु का निर्माण करनेवालों में इसके एक पूर्वज भी हैं। इसके सबूत के रूप में ये ताड़पत्र आप खुद देख सकते हैं।" यों कहते उसने अपनी पोशाकों में से एक ताड़पत्रों का ग्रंथ बाहर निकाला।

इस पर पहरेदारों का सरदार जोर से हँस पड़ा और बोला–"तुम अपने भालू का वंशवृक्ष राजा के दरबारी पुरोहित को दिखाकर राजा से कोई अच्छा इनाम बाद को प्राप्त कर लो, लेकिन तुम अभी उस बंदर वेषधारी दुश्मन के भेदिये को भालू के कंधों पर से नीचे उतार दो।"

ये बातें सुन वहाँ पर इकट्ठी भीड़ ने ज़ोर से तालियाँ बजाई। उनमें से एक व्यक्ति ने एक लंबी लाठी मर्कट की ओर फैलाकर कहा–"लो, यह तुम्हारा मंत्रदण्ड! कोई अद्भुत करके दिखा दो; हम भी तो देख ले!"

माया मर्कट ने झट से लाठी खींच ली, उसे जमीन पर टिकाकर छलांग मार बैठा और एक पैर पर खड़े हो बोला–"अबे मूर्खो, ऐसा अद्भुत जो मैंने अभी करके तुम्हें दिखाया, तुम लोगों में से कोई करके दिखा सकते हो? तुम्हारे राजा तथा

राज्य को जब खतरा पैदा होनेवाला है, ऐसी हालत में जादू देख खुश होनेवाले तुम लोगों को क्या कहना होगा? तुम्हें लज्जा नहीं आती?"

तब पहरेदारों का सरदार माया मर्कट के समीप पहुँचा, वह जिस लाठी पर एक पैर पर खड़ा हुआ था, उसे काटने जैसी अभिनय-मुद्रा में तलवार फैलाकर पूछा– "अबे बताओ, तुम सचमुच दुश्मन के भेदिये हो या नहीं? तुम जिस भल्लूक मांत्रिक की बात करते हो, क्या वह सच है?"

इस पर माया मर्कट बिजली की गति के साथ लाठी के छोर पर से उछलकर नीचे कूद पड़ा, पहरेदारों के सरदार के हाथ से तलवार खींचकर अपनी कमर में कसे रस्से को काट डाला, तब दांत किटकिटाते बोला–"मूर्खो, क्या तुमने मेरी ताक़त का परिचय पा लिया है? तुम लोग अपने राजा को तुरंत यहाँ पर बुला लाओ।"

इसे देख पहरेदारों के सरदार के साथ वहाँ पर जमा हुए सभी लोग भयकंपित हो उठे। इस बार माया मर्कट तलवार चलाते पहरेदार के समीप जाकर बोला– "अरे मंदबुद्धिवाले, क्या तुमने मेरा आदेश नहीं सुना है?"

पहरेदारों का सरदार जान के डर से कांपते हुए बोला–"हमारे महाराजा तो इस वक़्त दरबार में बैठे हुए हैं, ऐसी हालत में क्या उन्हें यहाँ पर बुला लाने की बात कहना ठीक है? वे क्रोध में आकर मेरा सिर काट डालेंगे।"

"तब तो मैं ही उनके पास पहुँच जाता हूँ। तुम आगे रहकर रास्ता दिखाओ।" माया मर्कट ने गरजकर कहा।

पहरेदारों का सरदार चुपचाप सीढ़ियाँ पारकर राजदरबार की ओर बढ़ा। पर लोग उसका अनुसरण करने से डरकर वहीं खड़े रह गये।

राजा जितकेतु गद्दी पर बैठे नगर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ वार्तालाप कर रहे थे। उस वक़्त अचानक पहरेदारों का सरदार दरबार के सामने प्रवेश करके बोला–"महाराज! मुझे क्षमा करें। मेरे पीछे मर्कट के रूप में तलवार लेकर आनेवाला कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, बल्कि महान शक्तिशाली है। हमारे राज्य पर जो भयंकर खतरा उपस्थित होनेवाला है; उस संबंध में चेतावनी देने के लिए आ रहा है।" यों कहकर वह बगल की ओर हट गया।

राजा जितकेतु के साथ सभी दरबारी माया मर्कट को देख विस्मय में आ गये, इसके बाद उसके विचित्र रूप को देख खिल-खिलाकर हँस पड़े।

इसके बाद राजा जितकेतु ने सिंहासन की बगल में खड़े दो मंत्रियों की ओर दृष्टि दौड़ाकर कहा–"इस वक़्त हमारे प्रधान मंत्री जीवगुप्त यहाँ पर नहीं हैं, यदि होते तो वे बहुत ही खुश हो जाते!" ये शब्द कहकर फिर राजा किसी सोच में पड़ गये, गंभीर चेहरा बनाकर पहरेदारों के सरदार की ओर देख बोले–"अरे कमबख्त कायर! एक तुच्छ बंदर के वास्ते तुमने न केवल नगर के प्रधान फाटक खोल दिये, बल्कि उसे खुद राजदरबार में लिवा लाये! अगर सचमुच दुश्मन के सैनिक क़िले के द्वार के पास पहुँच जाते तो न मालूम तुम क्या कर बैठते? इस अपराध में तुम्हें मैं शिरच्छेद का दण्ड सुनाता हूँ। नगर के प्रधान बधिक के लौटते ही तुम्हें सिरसवन में दण्ड दिया जाएगा।"

दण्ड की बात सुनते ही सभी दरबारियों ने खुशी के मारे तालियाँ बजाईं। तब तक राजा तथा दरबारियों की ओर एकटक देखनेवाला माया मर्कट उच्च स्वर में बोला–"तांत्रिक गुरु की जय!' फिर दरबार में उपस्थित सबको संबोधित कर बोला–"महाराजा जितकेतु और सभी दरबारियो, आप लोग सावधान होकर

मेरी बातें सुनिये! मैं साधारण बंदर नहीं हूँ। एक महान तांत्रिकवेत्ता का प्रधान शिष्य हूँ! मेरा नाम भ्रांतिमति है। इस वक़्त आप के नगर पर कालीवर्मा नामक एक महान वीर और भल्लूक मांत्रिक नामक एक महा मांत्रिक एक साथ हमला करने जा रहे हैं! आप लोगों को मैं चेतावनी देने पहले ही यहाँ पहुँच गया हूँ।"

माया मर्कट के मुँह से ये शब्द निकलते ही दरबार में कोलाहल मच गया। राजा जितकेतु पल भर के लिए चकित रह गया। तदुपरांत सिंहासन पर से उठ खड़े होकर माया मर्कट से बोला–"तुम्हारी बातों से ऐसा मालूम होता है कि तुम मामूली बंदर नहीं हो! अब तुम्हारी चेतावनी की बात रही! उस अपराधी कालीवर्मा के साथ उसके सभी मित्रों को बन्दी बनाने के लिए मैंने अपने प्रधान मंत्री जीवगुप्त के साथ कुछ सैनिकों को भी भेजा है! तुम्हें कोई पता है कि उनका इस वक़्त क्या हाल है?"

यह सवाल सुनकर माया मर्कट किचकिच करते हँस पड़ा, तब बोला–"आप के सारे सैनिक दल को कालीवर्मा ने अपनी तलवार से तथा भल्लूक मांत्रिक ने अपने मंत्रदण्ड से..." यों कहते वह रुक गया, फिर सहमी दृष्टि से चारों तरफ़ देख बोला–

"तांत्रिक गुरु की जय! अरे, मेरा मंत्र दण्ड कहाँ है?" फिर उछलकर थोड़ी दूर पर खड़े पहरेदारों के सरदार के कंठ को दबोच बैठा।

पहरेदारों का सरदार माया मर्कट की पकड़ में से अपने को बचाने के लिए छटपटाते चिल्लाने लगा–"हे मर्कट प्रभू! मंत्र दण्ड की बात मैं नहीं जानता! महाराज! मेरी जान बचाइये!"

इस पर दरबारियों में से दो साहसी व बलवान व्यक्तियों ने झट से आगे बढ़कर माया मर्कट की कमर पकड़कर खींच लिया और बोले–"इस राज्य के मनुष्यों के प्राण लेने का हक़ सिर्फ़ हमारे महाराजा

राक्षस का नाम सुनते ही राजा जितकेतु चौंक पड़ा और बोला–"क्या कहा? राक्षस? मैंने आज तक सिर्फ़ यही सुना है कि ऐसे भी लोग होते हैं, पर मैंने इस पल तक उन्हें देखा नहीं है।"

ये बातें सुन माया मर्कट ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"तब तो शीघ्र ही आप की यह इच्छा पूरी होने जा रही है। मगर उस भयंकर राक्षस को देखने के बाद फिर आप ज्यादा क्षण तक जीवित नहीं रह सकते।"

राजा जितकेतु के दोनों मंत्री जान के डर से थर-थर कांपते हुए एक दूसरे के चेहरे देख बोले–"महाराज! हम लोग इस खतरे से कैसे बच सकते हैं?"

"यह सवाल तो राजा बने मुझे मंत्री बने आप लोगों से पूछने का है। आप लोगों को अभी इसी वक़्त इन पदों से हटा रहा हूँ। प्रधान मंत्री तो जीवगुप्त हैं, अगर वे इस वक़्त यहाँ पर होते तो उचित सलाह देते और होनेवाले खतरे से हम सब को बचा देते।" फिर राजा जितकेतु माया मर्कट के समीप जाते हुए दरबारियों से बोले–"हमारे नगर पर मांत्रिकों के साथ राक्षस भी हमला करने जा रहे हैं। बताइये, हमें इस वक़्त क्या करना चाहिए?"

के लिए ही है। तुम्हारा यों जल्दबाजी करना कानून के विरुद्ध है।"

माया मर्कट ने क्रोध के मारे दांत पीसकर कहा–"राजा जितकेतु! मैं सारी बातें संक्षेप में सुनाता हूँ, सुनिये! आप यहाँ पर नगर के द्वार बंद कराकर दरबार लगाये मनोरंजन के कार्यक्रमों में अपना समय काट रहे हैं। इस कारण आप को यह मालूम नहीं होता कि नगर के बाहर क्या क्या हो रहा है? आप का प्रधान बधिक इस वक़्त भालू के रूप में है और कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिकों के साथ मिलकर एक और राक्षस को साथ लिये नगर पर हमला करने जा रहे हैं।"

दरबारियों में से किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। सब कोई इसी विचार में डूबे हुए थे कि राक्षस के द्वारा नगर में प्रवेश करने के पूर्व अपना सारा धन व गहने लेकर नगर को छोड़ कैसे भाग जाये!

राजा जितकेतु ने दरबारियों के द्वारा कोई उत्तर न पाकर यह भांप लिया कि वे कोई जवाब देने की स्थिति में नहीं हैं। तब माया मर्कट के निकट जाकर बोले– "तुम तो मर्कट के रूप में जरूर हो, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मंत्रणा देने में हमारे प्रधान मंत्री जीवगुप्त की तुलना में तुम कम नहीं हो! मेरे प्रधान मंत्री को अब तक उस राक्षस ने मार डाला होगा! इसलिए मैं तुम्हें अपने प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त करता हूँ। तुम शत्रु का संहार करने तथा इस राज्य की रक्षा करने की कोई योजना बनाकर तुरंत उसे अमल करो।" यों समझाकर मर्कट का हाथ पकड़कर उसे सिंहासन के पास लिवा लाये।

दरबार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। माया मर्कट अभय प्रदान करनेवाले जैसे तलवार को मुँह में दबाये, दोनों हाथ ऊपर उठाकर कुछ कहने जा रहा था, तभी मुँह में से तलवार फिसलकर खन् खन् की आवाज़ के साथ नीचे गिर पड़ी। माया मर्कट ने सर झुकाये बिना तलवार को अपनी पूँछ में लपेटकर ऊपर उठाया, फिर से कुछ समझाने को हुआ, मगर उसी समय दरबार के द्वार के समीप बड़ा कोलाहल मच गया। इस पर राजा जितकेतु के साथ सब ने सर उठाकर उस ओर देखा।

उसी समय मंत्री जीवगुप्त फटी पोशाकों में शिरस्त्राण के बिना सभा भवन में पहुँचा। उसके पीछे सामंत सूर्य भूपति और दो सैनिक भी आ पहुँचे। जीवगुप्त को देखते ही कुछ दरबारी उत्साह में आकर चिल्ला उठे–"हमारे प्रधान मंत्री

प्राणों के साथ जीवित हैं। वे राक्षस का आहार नहीं बने हैं।"

पर माया मर्कट ने क्रोध में आकर तलवार ऊपर उठाकर पूछा–"अबे, नगर के मूर्ख प्रमुख व्यक्तियो! अभी थोड़ी ही देर पहले राजा जितकेतु ने मुझे प्रधान मंत्री नियुक्त किया है, क्या आप लोग यह बात भूल गये?" फिर राजा जितकेतु से बोला–"हे राजा! आप इसका क्या जवाब देते हैं? यहाँ का प्रधान मंत्री मैं हूँ या दुश्मन को पीठ दिखाकर भाग आनेवाला यह जीवगुप्त?"

"मर्कट ही हमारे राज्य के प्रधान मंत्री हैं। मैं फिर एक बार यह बात स्पष्ट किये देता हूँ। जीवगुप्त इस पल से नगर के साधारण नागरिकों में से एक है।" राजा जितकेतु ने कहा।

मंत्री जीवगुप्त हिम्मत करके तलवार खींचकर माया मर्कट की ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाते बोला–"यह कमबख्त बन्दर क्या चन्द्रशिला नगर का प्रधान मंत्री है? एक बार मैंने राक्षस उग्रदण्ड के पत्थर के गदे के प्रहार से इसे बचाया है। अब मैं खुद इसका सर काटने जा रहा हूँ।" यों कहते जीवगुप्त मर्कट की ओर बढ़ा।

राजा जितकेतु ने क्रोध में आकर कहा–"जीवगुप्त! रुक जाओ! यह साधारण मर्कट नहीं है! भ्रांतिमति नामक ये बड़े तांत्रिक हैं।"

"इस तांत्रिक के द्वारा चुराया गया भल्लूक मांत्रिक का मंत्र दण्ड कहाँ पर है? उसके बिना यह साधारण जंगली वानर से भी गयाबीता है! तुच्छ है! मैं अभी अपनी तलवार से इसका सर और पूंछ काटने जा रहा हूँ।" इन शब्दों के साथ जीवगुप्त तलवार खींचे मर्कट पर हमला करने को हुआ।

इस पर माया मर्कट चिल्लाकर बोला–"तांत्रिक गुरु की जय!" फिर बिजली के वेग से अपनी पूंछ को बढ़ाकर जीवगुप्त के हाथ की तलवार को खींच लिया और अपनी तलवार उठाई। (और है)

असफल व्यापार

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, कुछ लोगों के कतिपय कार्य सफल नहीं होते; मेरा संदेह है कि आप जो कार्य कर रहे हैं, उसमें आप को सफलता नहीं मिलेगी। यह जानने के बाद कि अमुक कार्य सफल न होगा, तब शिवचरण गुप्त जैसे उस कार्य को त्याग देना चाहिए। श्रम को भुलाने के लिए मैं आप को वह कहानी सुनाता हूँ, सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: प्राचीन काल में शिवचरण और कालीचरण नामक दो दोस्त थे। शिवचरण वैसे वैश्य परिवार का था, फिर भी वह व्यापार किये बिना खेतीबाड़ी करते हुए अपने दिन आराम से बिता देता था। पर कालीचरण ने व्यापार

बेताल कथाएँ

में बड़ी दक्षता प्राप्त करके खूब धन कमाया। एक बार कालीचरण ने शिवचरण से पूछा—"शिवचरण, तुम वैश्यों का पेशा व्यापार न करके खेतीबाड़ी क्यों करते हो?"

"व्यापार हमारे वंश के लिए अनुकूल नहीं है।" शिवचरण ने उत्तर दिया।

शिवचरण के दादा-परदादाओं के जमाने में उसके पूर्वजों ने समुद्री व्यापार किया। मगर शिवचरण का दादा अपने जहाज के साथ समुद्र में डूबकर मर गया, जिससे उनका सर्वनाश हो गया। इसके बाद शिवचरण के पिता ने भूदेवी पर विश्वास करके खेतीबाड़ी शुरू की और अच्छी उन्नति की। शिवचरण के जमाने में खेतीबाड़ी खूब फली-फूली। इस कारण वह आराम से अपनी ज़िंदगी बिताने लगा।

पर एक दिन कालीचरण अचानक शिवचरण के घर आ धमका और बोला—"दोस्त! मैं समुद्री व्यापार करके अपार संपत्ति कमाने जा रहा हूँ। तुम भी आधा हिस्सा लेना चाहोगे तो दोनों खूब फ़ायदा उठा सकते हैं। इससे हम लोगों के खर्च में भी बचत हो सकती है।"

शिवचरण उस दिन न मालूम किस विचार में डूबा हुआ था, उसने कालीचरण के समुद्री व्यापार में हिस्सा लेने की सम्मति दी। अपनी पत्नी के मना करते रहने पर भी शिवचरण ने अपनी आधी जमीन बेच डाली, उस धन से सुगंध द्रव्य खरीदा, अपने चार पुत्रों को साथ ले कालीचरण के साथ नाव पर चल पड़ा।

रास्ते में उनकी नाव तूफान में फंस गई। उनका सारा माल भीगकर ख़राब हो गया। नौका तो बंदरगाह में लगी, मगर भीगे हुए माल को सस्ते में बेचकर वे लोग बड़ी मुश्किल से घर लौट आये।

शिवचरण की पत्नी ने सोचा, यह पापी धन चला गया तो कोई बात नहीं, उसके पति व पुत्र तो सकुशल लौट आये हैं। यही सोचकर उसने पहले जो मनौतियाँ की थीं, वे सब चुका दीं।

लेकिन इससे शिवचरण की पत्नी का दिल हल्का नहीं हुआ। क्यों कि इस बार शिवचरण ने अपनी बची-खुची सारी जमीन बेच डाली, फिर से सुगंध द्रव्य खरीदे, समुद्री व्यापार करने चलते हुए कालीचरण से पूछा—"क्यों दोस्त! तुम भी मेरे साथ चलने को तैयार हो?"

"अरे भाई, फिर से तुम समुद्री व्यापार करना चाहते हो?" शिवचरण की हिम्मत पर चकित होकर कालीचरण ने पूछा।

इसके बाद शिवचरण ने अपने पुत्रों को साथ चलने को कहा, पर उन लोगों ने साफ़ इनकार करते हुए जवाब दिया—"अगर हम जिंदा रहें तो कंद-मूल भी खाकर जान बचा सकते हैं। आप ने सारे खेत बेच डाले हैं न? जान रही तो हम मजदूरी करने के लिए तैयार हैं, लेकिन समुद्र की बलि होना नहीं चाहते।"

इस पर शिवचरण अकेला चल पड़ा। इस बार उसका व्यापार खूब चला। कहा जाता है कि लागत पूंजी से चार गुना नफ़ा मिले तो समुद्री व्यापार सफल होता है, पर शिवचरण अपनी लागत पूंजी के दस गुने नफ़े के साथ लौट आया, उसने जो जमीन व्यापार के वास्ते बेची थी, उसकी दुगुनी जमीन खरीदी और अन्य प्रकार की जायदाद भी बना ली।

इस बार कालीचरण शिवचरण के साथ व्यापार में साझीदार न बना था, शायद उसे इस बात का पछतावा हुआ हो, उसने शिवचरण के घर पहुँचकर पूछा—"दोस्त! क्या तुम इस वर्ष भी समुद्री व्यापार करना चाहते हो?"

शिवचरण ने धीरे से कहा—"कालीचरण, क्यों मैं फिर उस मुसीबत में फंसूं? व्यापार तो मेरे अनुकूल नहीं पड़ता। खेतीबाड़ी करना ही मैं अच्छी तरह से जानता हूँ, इसलिए मैं वही धंधा करूँगा।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, शिवचरण की मानसिक वृत्ति कैसी है? अगर वह यह समझता है कि

सचमुच व्यापार उसके अनुकूल नहीं पड़ता, तो वह क्यों कालीचरण के साथ समुद्री व्यापार करने चल पड़ा? जब चला, तब नुक़सान उठाया और यह साबित भी हो गया कि व्यापार उसके अनुकूल नहीं पड़ता, ऐसी हालत में फिर से एक बार समुद्री व्यापार करने का उसने संकल्प क्यों किया? और अपनी सारी संपत्ति उसमें क्यों लगाई? व्यापार में ख़ूब नफ़ा पाने के बाद उसने वह व्यापार क्यों बंद किया? शिवचरण की इस विचित्र मानसिक वृत्ति का रहस्य जानते हुए भी न बतायेंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया–"खेतीबाड़ी और व्यापार दो भिन्न मानसिक वृत्तियों से संबंधित हैं। व्यापार करनेवाले के लिए एक जुआखोर के साहस और लगन की ज़रूरत होती है, पर खेतीबाड़ी के लिए सहनशीलता तथा मेहनत की आवश्यकता है। शिवचरण का यह कहने के पीछे कि व्यापार उसके अनुकूल नहीं पड़ता, उसका उद्देश्य था कि एक जुआखोर के साहस का उसमें अभाव है। लेकिन उसका यह उद्देश्य कदापि न था कि व्यापार करने पर उसे जरूर नुक़सान ही होगा। कालीचरण ने जब उसे व्यापार में साझीदार होने के लिए निमंत्रण दिया तब उसके भीतर अपने दादा-परदादाओं की जुआखोरी की जो मानसिक वृत्ति गुप्त रूप से विद्यमान थी, वह उभरकर आई, लेकिन समुद्री व्यापार में नुक़सान उठाने के बाद उसके भीतर जुआखोरी वृत्ति और प्रबल हो उठी। इसलिए शिवचरण ने अपनी सारी संपत्ति दाँव पर रखकर समुद्री व्यापार के साथ जुआ खेला जिससे उसे लाभ पहुँचा। इसके बाद वह उसकी सहज मानसिक वृत्ति के लिए जुआ अनुकूल नहीं है। इसीलिए वह फिर से खेतीबाड़ी में स्थिर हो गया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

रसोइये

देवघर की हाट में बहुत दिन बाद गोपीनाथ और राघव नामक दो बचपन के साथियों की अचानक मुलाक़ात हो गई। विवाह के बाद दोनों दो अलग-अलग गाँवों में बस गये थे। गोपीनाथ कोई छोटा-मोटा व्यापार करता था। उसकी पत्नी शांताबाई थी और उनके युक्त वयस्क एक पुत्र था।

पर राघव खेतीबाड़ी करते अपने दिन गुज़ारता था। उसकी पत्नी कांताबाई थी। उनके घर विवाह योग्य एक कन्या थी।

दोनों के पेशे अलग थे, लेकिन उनकी जिंदगी में एक बात की समानता थी। दोनों की पत्नियाँ बड़ी आलसी थीं। वे अपने पति और बच्चों को खाना बनाकर खिलाती न थीं। ऐसी बात न थी कि वे दोनों रसोई बनाना जानती ही नहीं, लेकिन रसोई बनाने की उनमें लगन न थी। जबर्दस्ती अगर उनके हाथों से रसोई बनवा देते तो वह खाने योग्य न होती थी। घरवालों को फाका रहना पड़ता था। इस वजह से वे दोनों दोस्त अपने अपने घर में खुद रसोई बनाते और अन्य काम भी वे ही संभालते थे।

जब दोनों की मुलाक़ात हुई, तब उन्हें एक उपाय सूझा। वह यह कि अपनी पत्नियों के आलसीपन को दूरकर उन्हीं के हाथों में रसोई बनवाया जाय। उस योजना के अनुसार गोपीनाथ के घर राघव और राघव के घर गोपीनाथ पहुँचे और अपने मित्रों की पत्नियों को अपना अपना परिचय दिया।

राघव ने शांताबाई से कहा—"बहन, तब तो मेरे दोस्त गोपीनाथ घर पर नहीं हैं? उफ़! मैं तो शादी का प्रस्ताव लेकर आया था।"

जगत नारायण

चार दिन बीत गये, फिर भी गोपीनाथ घर न लौटा। राघव ने गोपीनाथ के घर चार दिन खूब दावतें उड़ाईं। आखिर शांताबाई को यह समझाकर कि उसके घर पर ज़रूरी काम हैं, वह अपने गाँव चल पड़ा।

राघव के चले जाने के दूसरे दिन गोपीनाथ घर लौट आया। उधर राघव की पत्नी ने भी अपने आलसीपन को त्यागकर गोपीनाथ को चार दिन तक बढ़िया भोजन बनाकर खिलाया। उसने भी बड़ी आतुरता के साथ राघव का इंतज़ार करने का अभिनय किया और घर पर काम का बहाना बताकर लौट आया।

शांताबाई बहुत ही खुश हो गई। हाट से आया हुआ राघव शहर के उपयुक्त पोशाक पहनकर देखने में संपन्न परिवार का लगता था। शांताबाई ने सोचा कि उसके पुत्र की शादी में दहेज़ के रूप में अच्छी खासी रक़म हाथ लगेगी, उसने राघव से कहा–"भाई साहब, मेरे पति तो हाट में गये हैं, लौटते ही होंगे।" यों समझाकर शांताबाई ने बढ़िया मिष्टान्न बनाये और राघव को अच्छी दावत खिलाई। उस दिन गोपीनाथ घर न लौटा। फिर भी शांताबाई ने राघव को रोका–"भाई साहब, कल वे ज़रूर लौट आयेंगे। आप तब तक रुक जाइये।"

दोनों जब अपने अपने घर पहुँचे, तब उनकी पत्नियों ने बताया कि उनके मित्र शादी का प्रस्ताव लेकर आये थे और चार दिन रहकर निराश घर लौट गये।

इसके बाद दोनों की पत्नियों ने उन्हें जल्दी ही शादी का निर्णय करने पर ज़ोर दिया। दोनों मित्र फिर अगले हाट के दिन मिले। अपनी योजना के सफल होने व दोनों की पत्नियों द्वारा उत्साहपूर्वक रसोई बनाकर खिलाने की बात पर चर्चा की और भावी कार्यक्रम पर विचार करके अपने अपने घर लौट गये।

अपने पति के घर लौटते ही शांताबाई ने बड़ी आतुरता के साथ पूछा–"अजी, बताइये तो, शादी का क्या निर्णय हुआ?"

गोपीनाथ ने क्रोध का अभिनय करते हुए कहा–"चाहे वे अमीर क्यों न हो, उन्हें ऐसा घमण्ड नहीं होना चाहिए! यह रिश्ता होने को नहीं।"

"क्या बात है?" शांताबाई ने पूछा।

"और क्या? कहते हैं कि उनकी कन्या रसोई नहीं बनायेगी! शादी के बाद हमारे बेटे को ही खुद रसोई बनाकर उसे खिलाना है।" गोपीनाथ ने कहा।

"यह कैसी बात है? हमारा लड़का रसोई क्यों बनायेगा?" शांताबाई ने पूछा।

"लगता है कि राघव को यह मालूम हो गया है कि हमारे घर में मैं ही रसोई बनाता हूँ, सुनते हैं कि उनके घर की औरतें भी रसोई नहीं बनाती हैं।" गोपीनाथ ने समझाया।

शांताबाई ने सोचा कि उसकी वजह से उसके बेटे का अच्छा रिश्ता हाथ से निकलता जा रहा है, शांताबाई ने दुखी होकर कहा–"अजी, उन्हें समझा दीजिए कि जब कभी मेरी तबीयत बिगड़ जाती है, तभी आप रसोई बनाते हैं, बाक़ी समय मैं ही बनाती हूँ।"

"यह तुम बेतुकी बात क्या करती हो? उन लोगों ने सीधे मेरे मुँह पर यह बात थोड़े ही कही है कि मैं रसोई बनाता हूँ। मुझे अपनी ओर से सफाई देने की

क्या ज़रूरत है? एक अच्छा रिश्ता हाथ से निकल गया।" गोपीनाथ ने कहा।

इस बीच राघव भी उदासपूर्ण चेहरा लेकर घर पहुँचा और बोला–"कांता, मैं क्या बताऊँ? हमारी क़िस्मत ही खोटी रही! यह रिश्ता हाथ से निकल गया!"

"क्यों? क्या बात है?" कांता ने पूछा।

"वे कहते हैं कि शादी के होते ही रसोइये को तिलांजली देकर हमारी कन्या के हाथों से ही रसोई बनवायेंगे! ऐसा लगता है कि उन्हें यह मालूम हो गया कि हमारे घर में पुरुष ही खाना बनाते हैं।"

"अजी, आप यह क्या कहते हैं? आप तो अपनी इच्छा से रसोई बनाते हैं! मैंने थोड़े ही हठ किया था कि मैं कभी रसोई बनाऊँगी ही नहीं। जब आप घर पर नहीं थे, तब क्या मैंने मिष्टान्न नहीं बनाये? आप के दोस्त ने मेरे हाथ का खाना लगातार चार दिन जो खाया है?" कांताबाई ने कहा। "तब तो इस वक़्त तुम कहना क्या चाहती हो?" राघव ने पूछा।

"हमारी लड़की खाना बनायेगी! उसके रसोई न बनाने के वास्ते क्या हम यह बढ़िया रिश्ता हाथ से खो बैठेंगे? आप अभी जाइये, मुहूर्त निश्चय कर लौटियेगा।" कांताबाई ने राघव को समझाया।

राघव ने गोपीनाथ के घर पहुँचकर कहा–"दोस्त, और बहन शांताबाईजी! मेरी कन्या रसोई बनाने को तैयार है। क्या हम लग्न मुहुर्त निर्णय कर लें?" ये बातें सुनने पर शांताबाई की जान में जान आ गई। जब कांताबाई को मालूम हुआ कि राघव मुहूर्त निश्चय करके लौटा है, तब गहरी सांस लेकर उसने शपथ खाई–"भगवन! मैं आइंदा कभी पुरुषों के हाथ से खाना नहीं बनवाऊँगी?"

शादी के बाद असली रहस्य प्रकट हो गया कि दोनों परिवार साधारण परिवार ही हैं। चाहे जो हो, गोपीनाथ और राघव को रसोई बनाने के काम से सदा के लिए छुट्टी मिल गई।

दुष्ट भाव–दुष्परिणाम

करटक शास्त्री साँप का मंत्र फूंकने में सिद्ध हस्त था, जब कि दमनक शास्त्री लकवा का इलाज करने में मशहूर था। मगर दोनों संकुचित मनोवृत्ति के थे। दोनों ने खूब धन कमाया और कहीं गुप्त रूप से छिपा रखा। साथ ही इलाज के रहस्य को भी दोनों ने गुप्त रखा, बुढ़ापे के निकट आने पर भी दोनों ने यह रहस्य किसी पर प्रकट नहीं किया। उनके यहाँ से विद्याएँ सीखने के लिए कई युवक आगे आये। लेकिन दोनों ने किसी को नहीं सिखाई, वे मरने के पहले ये विद्याएँ अपने बच्चों को सिखलाना चाहते थे।

एक दिन सवेरे दमनक शास्त्री को साँप ने डस लिया, शास्त्री ने घर लौटकर अपने बेटे को बताया कि उसे साँप ने डस लिया है, इससे आगे कुछ बताने के पहले ही बेहोश हो फेन उगलते वह मर गया।

दमनक शास्त्री का लड़का करटक शास्त्री के घर दौड़ गया। उससे निवेदन करने को हुआ कि वह साँप का मंत्र फूंककर उसके पिता को बचा ले, मगर उसी समय करटक शास्त्री लकवे का शिकार हुआ और उसके हाथ, पैर और मुंह भी सन्न हो गये।

मित्रता का मूल्य

मगध राज्य की गद्दी पर जब चन्द्रसेन बैठा, तब गुरुकुल के उसके चार सहपाठी चन्द्रसेन के दर्शन करने आये और उनसे मदद माँगी, क्योंकि वे गरीब थे।

चन्द्रसेन ने पूछा–"दोस्तो! बताइये, आप नौकरी चाहते हैं या धन?"

एक ने कहा–"मुझे धन दिला दे तो मैं अपने साथ चार और लोगों की आजीविका का इंतजाम कर सकता हूँ।" चन्द्रसेन ने उसे मुंह मांगा धन देकर भेज दिया।

दूसरे ने कहा–"मुझे नौकरी दिला दे तो मैं आराम से अपने दिन बिताऊँगा।"

चन्द्रसेन ने उसे एक नौकरी दिलाई।

तीसरे ने कहा–"मैं सिर्फ़ खेतीबाड़ी करना जानता हूँ, इसलिए मुझे थोड़ी-सी ज़मीन दिला दे तो मैं खेतीबाड़ी करूँगा।"

चन्द्रसेन ने उसे जमीन दिलाई। चौथे ने कहा–"मैं सिर्फ़ आप की दोस्ती चाहता हूँ! वही मेरे लिए बड़ी भारी संपत्ति है! अलावा इसके राजा के लिए अच्छे मित्रों के द्वारा उपकार हो सकता है।" उसका नाम वीरदास था।

चन्द्रसेन ने सोचा कि उसकी मित्रता वीरदास को ऐश्वर्य दिला सकती है, प्रत्यक्ष देखना है, यह विचार करके उसने वीरदास की इंच्छा की पूर्ति करने का वचन दिया।

राजा चन्द्रसेन रोज शाम को रथ पर राजपथ से होकर अपने उद्यान में जाता, तब वीरदास को भी अपने साथ ले जाता था। नगर के प्रमुख नागरिक और व्यापारियों को मालूम हो गया कि वीरदास राजा का एक घनिष्ट मित्र है।

एक महीना बीत गया। एक दिन राजा के साथ रथ पर वीरदास उद्यान की ओर जा रहा था, तब व्यापारियों के एक

नारायण चतुर्वेदी

केन्द्र पर उसने रथ को रुकवा दिया, राजा से यह बताकर वह वहीं पर रथ से उतर गया कि उसे वहाँ पर एक जरूरी काम है।

दूसरे ही क्षण बड़े-बड़े व्यापारियों ने वीरदास को घेर लिया, उसका आदर-सत्कार किया और दरबार के व्यवहारों की चर्चा की। वीरदास ने संकेत के रूप में बताया कि राजा तो अपनी आमदनी बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं, शायद व्यापारियों पर कर बढ़ाया जा सकता है।

फिर क्या था, व्यापारियों ने वीरदास से निवेदन करना शुरू किया—"महाशय, हम लोग अपनी अपनी हैसियत के मुताबिक़ आप को भेंट देंगे, आप कृपया हम पर कर का भार पड़ने से रोकें।"

इस पर वीरदास ने कोई आपत्ति नहीं की। इसके बाद सभी व्यापारी सप्ताह में एक बार अपने अपने व्यापार की आमदनी में से थोड़ा सा अंश उसे चुकाने लगे। जल्द ही वीरदास बहुत बड़ा धनी बन बैठा। यह निर्णय वैसे गुप्त रूप से नहीं हुआ था। व्यापारियों की हिसाब-किताब की जांच करनेवाले अधिकारी और न्यायाधिपति भी इस षड़यंत्र में शामिल थे। वे लोग भी वीरदास के घर जाकर जब तब अपना हिस्सा वसूल करते थे।

थोड़े दिन बाद वीरदास ने राजधानी में एक भव्य महल बनवाया, गृह-प्रवेश के उत्सव के समय राजा, मंत्री, राजकर्मचारी तथा प्रमुख व्यापारियों को भी निमंत्रण भेजा। नाच-गान आदि मनोरंजन के कार्यक्रमों के साथ दावत भी अच्छे वैभव के साथ संपन्न हुए। राजा ने आश्चर्य में आकर वीरदास से पूछा—"दोस्त! तुम इतने थोड़े समय में कैसे ऐसे संपन्न बन सके?"

"महाराज! आप की मित्रता के द्वारा मैं राज्यों का भी संपादन कर सकता हूँ।" वीरदास ने उत्तर दिया।

"मैं जानना चाहता हूँ कि तुमने यह सारी संपत्ति कैसे कमाई?" राजा ने पूछा।

"महाराज! आप कल रात को मेरे कमरे में गुप्त रूप से छिपे रहकर सारा तमाशा देख लीजियेगा! वीरदास ने कहा।

दूसरे दिन वीरदास ने व्यापार के निरीक्षक तथा न्यायाधिकारी के यहाँ एक उड़ती खबर पहुँचवा दी। उस दिन रात को राजा वीरदास के घर पहुँचा और एक कमरे में छिप गया। थोड़ी देर बाद निरीक्षक ने प्रवेश करके वीरदास से विनती की–"महाशय, इस बार मेरे हिस्से का धन आप ही रख ले और बदले में मेरी एक सहायता करने की कृपा करें।"

"बताओ भाई, वह कैसी सहायता है?" वीरदास ने निरीक्षक से पूछा।

"मुझे पता चला है कि मुझे इस अपराध पर राजा नौकरी से हटानेवाले हैं कि मैं ठीक से अपना काम नहीं करता। मेरी अच्छी खासी आमदनी हाथ से निकल जाएगी! आप कृपया राजा को समझा दीजिए कि मैं बड़ी समर्थता पूर्वक अपना काम करता हूँ। मेरी नौकरी बचाइये।" निरीक्षक ने प्रार्थना की। "अच्छी बात है, मैं कोशिश करूँगा।" वीरदास ने कहा।

निरीक्षक के जाने के बाद थोड़ी देर में न्यायाधिकारी आ पहुँचा और गिड़गिड़ाने लगा–"वीरदासजी! आप इस दफे का मेरा हिस्सा रख ले, सुना है कि राजा मेरा तबादला करनेवाले हैं, कृपया मेरा तबादला रुकवा दीजिए! जहाँ व्यापारी नहीं हैं, वहाँ किसानों के बीच में क्या कमा सकता हूँ?"

"अच्छी बात है, कोशिश करूँगा।" यों समझाकर वीरदास ने न्यायाधिकारी को भेज दिया, फिर राजा के पास पहुँचकर बोला–"महाराज! आप ने स्वयं देख लिया है न? मैंने आप की मित्रता की वजह से ही इन घूसखोरों को अपनी ओर आकृष्ट किया है। आप के शासन में से इन घूसखोरों का निर्मूल करने में मेरी दोस्ती कारगार सिद्ध हुई है न?"

राजा ने वीरदास की बात मान ली, और कोई बहाना बनाकर निरीक्षक और न्यायाधिकारी को भी उनके पदों से हटाया।

भृगु

"भृगु" का अर्थ "प्रकाशमान" होता है। कुछ पंडितों का विचार है कि "भृगु" नामक शब्द अग्नि के पर्यायवाची शब्दों में से एक है। भृगवंश वैदिक काल के समय तक भी अत्यंत प्राचीन था। कहा जाता है कि ऋग्वेद में अग्नि से संबंधित सूक्तों में भृगुओं का उल्लेख इक्कीस बार हुआ है। ऋकों के द्वारा यह विदित होता है कि भृगुओं ने मानवों को अग्नि प्रदान की है, उन लोगों ने यह पता लगाया कि अग्नि लकड़ी में निहित है, तब लकड़ी का मंथन कर अग्नि पैदा की और उसे मानवों के हितकारी बनाया।

वैदिक काल में जब भृगुओं का अग्नि के साथ निकट संबंध था तो पुराण काल में भृगु महामुनि का राक्षसों के साथ निकट संपर्क रहा है। ब्रह्मा के हृदय में उत्पन्न ये महामुनि अत्यंत प्राचीन हैं। लेकिन इनकी बड़ी पत्नी हिरण्य कश्यप की पुत्री दिति है। (कहा जाता है कि कश्यप की पत्नी का नाम भी दिति है; लेकिन उसने राक्षसों का जन्म दिया है, किंतु राक्षस की पुत्री नहीं, दक्ष की पुत्री है।) भृगु और दिति से उत्पन्न व्यक्ति कवि है। इस कवि का पुत्र ही शुक्र है—दानवों का गुरु!

राक्षसों ने भृगु के निवास को अपने गुप्त केन्द्र के रूप में इस्तेमाल करके देवताओं के साथ युद्ध किया। भृगु की पत्नी उन्हें अपने घर छिपाकर रखती रही। यह बात मालूम होने पर विष्णु ने अपने चक्र द्वारा उसे मार डाला। इस पर भृगु ने क्रोध में आकर विष्णु को शाप दिया कि वे अपनी पत्नी के वियोग में असहनीय दुख भोगे, यही कारण है कि रामावतार में विष्णु ने अपनी पत्नी के वियोग के दुख का अनुभव किया।

भृग ने ख्याति नामक नारी के साथ भी विवाह किया था। वह कर्दम प्रजापति की पुत्री थी। इसके द्वारा भृगु ने धाता और बिधाता नामक दो पुत्र पैदा किये।

भृगु के पुलोमा नामक एक और पत्नी थी। भृगु ने पुलोमा को आदेश दिया कि वह अग्नि-गृह में आग्नियों की देखभाल करती रहे; पर एक बार पुलोम नामक राक्षस ने अग्नि गृह में प्रवेश करके पुलोमा को देख अग्नि से पूछा–"यह नारी कौन है?"

अग्नि ने कहा–"यह भृगु की पत्नी है।"

पुलोम यह कहकर कि पुलोमा तो उसकी पत्नी बनने योग्य है, उसे उठाकर ले गया। इसके बाद उसके गर्भ से च्यवन ने जन्म लेकर उस राक्षस को भस्म कर डाला।

अपनी पत्नी को राक्षस के द्वारा उठा ले जाने का कारण अग्नि है, इस पर भृगु ने क्रोधित हो अग्नि को सर्व भक्षक बन जाने का शाप दिया।

"जो बात में जानता था, उसे मैंने कह दी, इसमें दोष ही क्या है?" यों जवाब देकर अग्नि भी नाराज़ हो उठा। देवताओं को हव्य प्रदान किये बिना कहीं जाकर छुप गया। इस पर देवताओं ने अग्नि को नित्य पवित्र बताया।

भृगु को ऋषि श्रेष्ठ बताते हैं। भृगु निग्रह शक्ति के साथ अनुग्रह शक्ति भी रखते हैं, वसिष्ठ ने जब निमि को मर जाने का शाप दिया तब भृगु ने निमि को 'निमेष' (पलक झपने की देरी) के रूप में सजीव रखा था।

भृगु ने एक मिथ्या भाषण के द्वारा वीतहव्य नामक क्षत्रिय को ब्राह्मण बनाया। वत्स देश के राजा वीतहव्य के पुत्रों ने काशी राजा के परिवार को मारकर दिवोदास को हराया। दीवोदास का पुत्र प्रतर्थ वीतहव्य के पुत्रों का वध करके वीतहव्य को मारने पहुँचा। इस पर वह भृगु के आश्रम में जाकर छिप गया। प्रतर्थ जब वीतहव्य की खोज में गया तब भृग ने बताया कि उनके आश्रम में कोई क्षत्रिय नहीं है।

सरस्वती में उफान

गौतम नामक ऋषि के एकद, द्वित तथा त्रित नामक तीन पुत्र थे। पिता ने उन तीनों को अच्छी शिक्षा दिलाई।

तीनों में त्रित श्रेष्ट निकला। उसके व्याख्यान सुनने के लिए लोग दूर-दूर से आया करते थे।

एक बार तीनों भाइयों ने यज्ञ करने का संकल्प किया और वे उचित प्रदेश की खोज में चल पड़े।

वे लोग जब एक निर्जन प्रदेश से होकर गुजर रहे थे, तब आगे चलनेवाले त्रित के सामने अचानक एक बाघ प्रत्यक्ष हुआ। निकट आने तक उसने उसे देखा न था।

एकत और द्वित ने बाघ को पहले ही देखा, पर त्रित को उन लोगों ने सावधान नहीं किया, वे दोनों भागकर पेड़ पर चढ़ गये।

त्रित भी भागते-भागते एक उजड़े कुएँ में गिर पड़ा। इस तरह वह बाघ के ख़तरे से बच गया। जल्द ही वह होश में आया।

त्रित के भाई यह सोचकर बहुत ही खुश हुए कि बाघ ने उसे मार डाला होगा और यह भी सोचा कि उसे यज्ञ-फल देने की जरूरत नहीं रह गई।

मगर भूत-पिशाचों के उच्चाटन का मंत्र केवल त्रित ही जानता था। उसके भाई जानते न थे। उनकी यज्ञ भूमि को भूत-पिशाचों ने घेर लिया।

उजड़े कुएँ में पड़े त्रित ने सोचा कि यज्ञ का मुहूर्त निकट आया है, तब उसने पत्थरों से आग पैदा की, सूखे पत्ते जलाकर उसी को अपना यज्ञ माना।

वह पवित्र स्थान न था। उसके पास यज्ञ का उपकरण एक भी न था। फिर भी उसकी लगन पर प्रसन्न हो देवता प्रत्यक्ष हुए और उससे वर माँगने को कहा।

त्रित ने देवताओं से यही निवेदन किया–"आप लोग इस कुएँ को पवित्र बनाइये। इसमें स्नान करनेवालों पर पवित्र बन जाने का अनुग्रह कीजिए।" दूसरे ही क्षण कुएँ में पानी आया और उसे ऊपर उठाया।

अंतर्वाहिनी के रूप में स्थित सरस्वती नदी त्रित के वर के प्रभाव से ऊपर प्रकट हुई। इस पर सब ने प्रसन्न होकर त्रित की प्रशंसा की।

अष्टावक्र एकपाद नामक ब्राह्मण का पुत्र था। एकपाद के पास कई शिष्य पढ़ा करते थे। एकपाद दिन-रात बिना विराम के उनसे वेदाध्ययन करवाते थे। एकपाद की पत्नी सुजाता जब गर्भवती थी, तब उसके गर्भ में स्थित शिशु ने आक्षेप किया–"आप अपने शिष्यों के द्वारा यों निद्राहार के बिना क्यों पढ़ाते हैं? उनकी तबीयत खराब हो जाएगी।"

इस पर एकपाद ने अपने पुत्र को शाप दिया–"अध्ययन के बारे में तुमने यों वक्र बातें कीं, इसलिए तुम अष्ट वक्रों के साथ पैदा हो जाओ।"

सुजाता के प्रसव दिन निकट आ रहे थे। घर में खाद्य सामग्री न थी। इसलिए एकपाद धन की याचना करने राजा जनक के पास पहुँचे। उनकी अनुपस्थिति में ही अष्टावक्र पैदा हुआ।

अष्टावक्र के मामा उद्दालक थे। सुजाता ने उद्दालक के घर पर ही अष्टावक्र का जन्म दिया। उद्दालक के श्वेतकेतु नामक पुत्र पैदा हुआ। एक दिन अष्टावक्र अपने मामा की जांघ पर बैठा हुआ था, इस पर श्वेतकेतु ने आपत्ति उठाकर कहा–"तुम मेरे पिता की जांघ पर क्यों बैठे हो? अपने पिता की जांघ पर बैठ जाओ।"

तब अष्टावक्र ने अपनी माँ से पूछा–"माँ, मेरे पिताजी कहाँ हैं?"

"धन कमाने वे राजा जनक की सभा में गये हुए हैं।" सुजाता ने समझाया।

उसी क्षण अष्टावक्र अपने पिता की खोज में राजा जनक की सभा में पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही उसे मालूम हुआ कि उसका पिता राजा जनक की सभा में वरण के पुत्र वंदी के साथ शास्त्रार्थ करके हार गये हैं। इस कारण एकपाद को

पानी में डुबोया है। एकपाद के साथ वन्दी के हाथों में पराजित सभी लोग पानी में डूबे हुए थे।

अष्टावक्र ने राज सभा में प्रवेश करके वन्दी को ललकारा कि उसके साथ तर्क करे। दोनों के बीच चर्चा हुई, वन्दी हार गया। पुरस्कार के रूप में अष्टावक्र ने अपने पिता तथा अन्य पानी में डुबोये गये व्यक्तियों को मुक्त करने की माँग की। इस प्रकार अष्टावक्र ने उसे शाप देनेवाले अपने पिता को ही अपमान से बचाया।

अष्टावक्र ने वदान्य की पुत्री सुप्रभा के साथ विवाह करना चाहा, पर वदान्य ने शर्त रखी कि वह जो परीक्षा रखेगा, उसमें सफल निकलने पर अष्टावक्र के साथ सुप्रभा का विवाह किया जाएगा। वदान्य ने अष्टावक्र को बताया कि हिमालयों में एक नारी दिखाई देगी, उसे देख लौट आवे।

अष्टावक्र हिमालयों में जाते कुबेर के अतिथि बनकर टिक गया। कुबेर ने उसका वैभव के साथ अतिथि-सत्कार किया और नृत्य-गीतों का भी प्रबंध किया। गंधर्वों ने गीत गाये, अप्सराओं ने नृत्य किया। इस तरह एक वर्ष बीत गया।

इसके बाद अष्टावक्र वदान्य के द्वारा बतायी गई नारी से मिला। उस युवती ने अपने स्वर्ण महल में अष्टावक्र को आतिथ्य देकर उसे अपने वश में करना चाहा, मगर अष्टावक्र विचलित नहीं हुआ। उस युवती ने विवाह का भी प्रस्ताव रखा।

अष्टावक्र ने उस युवती से कहा—"तुम खुद अपने को कैसे सौंप सकोगी? तुम्हारे पिता कौन हैं? उनके द्वारा सौंपने पर मैं तुम्हें ग्रहण कर सकता हूँ।"

तब जाकर उस युवती ने असली बात प्रकट की। वदान्य ने अष्टावक्र की परीक्षा लेने के लिए उस नारी की सृष्टि की थी। उस परीक्षा में अष्टावक्र सफल निकला। उसने लौटकर सुप्रभा के साथ विवाह किया।
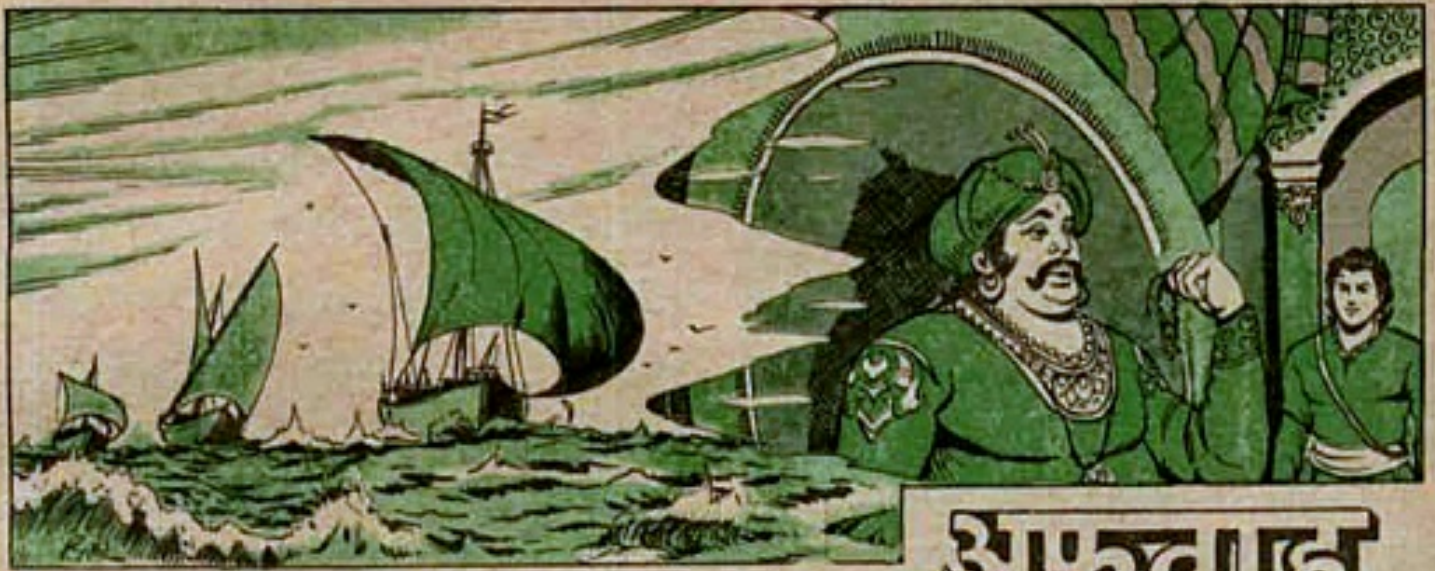
अफ़वाह

प्राचीन काल में एक धनी वैश्य था। उसके सुबुद्धि नामक एक पुत्र तथा सुमित्रा नामक एक पुत्री थी। वैश्य ने मरते वक़्त अपने पुत्र को निकट बुलाकर समझाया-"बेटा, मेरी मृत्यु के बाद भी तुम हमारे व्यापार को ठीक से चलाओ, तुम और तुम्हारी बहन के बीच अच्छा स्नेह-संबंध रहे, यही मेरी अंतिम इच्छा है।"

अपने पिता की मृत्यु के थोड़े दिन बाद सुबुद्धि तीन नावों पर माल लदवाकर विदेशों में व्यापार करने चल पड़ा। रवाना होते वक़्त उसने अपनी बहन से कहा-"बहन! मैं बहुत दिनों तक नहीं लौट सकता। मेरी गैर हाज़िरी में तुम अपने धर्म का अतिक्रमण मत करो। कभी पराये लोगों से बातचीत न करो।" इसके बाद सुबुद्धि ने अपना चित्र अपनी बहन के हाथ दिया और उसका चित्र लेकर नावों पर सवार हो समुद्र पर चल पड़ा।

दो साल बीत गये। तीसरा साल चल रहा था। सुबुद्धि की नावें एक बंदरगाह में पहुँचीं। वहाँ पर लंगर डालकर अपने साथ एक थाल में हीरे व बढ़िया कालीन आदि अच्छे उपहारों के साथ सुबुद्धि उस देश के राजा सुदर्शन के पास पहुँचा।

सुबुद्धि ने राजा के हाथ वे उपहार सौंपकर निवेदन किया-"महाराज! आप के देश में व्यापार करने की कृपया मुझे अनुमति दीजिए।"

सुबुद्धि के द्वारा समर्पित उपहार देख राजा सुदर्शन बहुत खुश हुए। किसी भी व्यापारी ने उसे ऐसे अमूल्य उपहार सौंपे न थे। इसलिए राजा सुदर्शन ने सुबुद्धि को उसकी इच्छा के अनुसार न केवल उसे व्यापार करने की अनुमति दी, बल्कि

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी

उसकी नौकाओं में लाई गई चीज़ों को देखने के लिए राजा सपरिवार बंदरगाह में पहुँचा ।

नौका में स्थित वस्तुओं को देख प्रसन्न होनेवाले राजा सुदर्शन की दृष्टि सुमित्रा के चित्र पर पड़ी। इस पर राजा ने सुबुद्धि से पूछा—"यह सुंदरी कौन है?"

"महाराज, यह मेरी बहन है!"

"क्या इस सौंदर्य के योग्य उसका शील-स्वभाव भी है?" राजा ने पूछा ।

"महाराज! उसके शील में कोई दोष ढूंढ नहीं सकते ।" सुबुद्धि ने कहा ।

"तब मैं उस सुंदरी को अपनी पट्ट महिषी बनाऊँगा ।" राजा ने कहा ।

राजा के साथ आये हुए सेनापति के मन में ये बातें सुनने पर ईर्ष्या पैदा हुई। उसने सोचा—"आखिर यह वैश्य युवती हमारी रानी बनेगी? क्या हमारी पत्नियाँ इसकी सेवा करें?" पर उस दुष्ट सेनापति ने प्रकट रूप में कहा—"महाराज! मैं इस युवती को अच्छी तरह से जानता हूँ । यह दुश्चरित्रा है ।" ये बातें सुनते ही राजा सुदर्शन के मन में सुबुद्धि के प्रति बड़ा क्रोध आया । उसने कहा—"तुमने दुश्चरित्रा को शीलवती क्यों बताया? मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा ।"

"महाराज! आप के सेनापति झूठ बोलते हैं! हो सके तो, उन्हें अपने कथन को सत्य प्रमाणित करने को कहिये । वे कहते हैं कि मेरी बहन को जानते हैं, इसलिए उनसे कहिये कि वे मेरी बहन की अंगूठी ले आवे! साथ ही इस बात का पता लगा लाने के लिए कहिए कि उनका तिल कहाँ पर है?" सुबुद्धि ने निवेदन किया ।

राजा सुदर्शन को ये बातें न्यायसंगत प्रतीत हुईं। उसने अपने सेनापति से कहा—"सुनो, तुम दो महीनों के अन्दर उस युवती की अंगूठी के साथ उसके जन्म के समय के तिल का पता न लगा सकोगे, तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूँगा ।"

इसके बाद सेनापति उसी वक़्त चल पड़ा और सुमित्रा के देश में आ पहुँचा ।

वहाँ पर एक भठियारिन से मिलकर उसे लोभ दिखाया–"बूढ़ी नानी! मुझे सुमित्रा के जन्म के समय के तिल का रहस्य के साथ उसकी अंगूठी ला दोगी तो तुम्हें मैं बहुत सारा सोना पुरस्कार में दे दूंगा।"

भठियारिन धन के लोभ में पड़कर सुमित्रा के घर पहुँची। बातचीत के सिलसिले में उसने यह पता लगाया कि जन्म के समय का तिल सुमित्रा की पीठ पर बायीं तरफ़ है और साथ ही उसकी अंगूठी को चुरा लाकर सेनापति को दिया।

इसके बाद सेनापति अपने देश को शीघ्र लौट आया। राजा सुदर्शन को सुमित्रा की अंगूठी सौंपने के साथ उसके जन्म के समय के तिल का रहस्य भी बता दिया। सुमित्रा के प्रति जो अफ़वाह फैला दी गई थी, उसे सेनापति ने साबित किया, इस कारण राजा सुदर्शन ने क्रोध में आकर सुबुद्धि को मौत की सजा दी।

लेकिन सुबुद्धि ने राजा से निवेदन किया–"महाराज! इस दूर के देश में मरने के पहले एक बार मैं अपनी बहन को देखना चाहता हूँ, आप उसे एक बार यहाँ बुलवाकर मुझे उसे देखने का मौक़ा दीजिए! तब मैं निश्चित होकर मृत्युदण्ड को भोगने तैयार हो जाऊँगा।"

सुबुद्धि की इस बिनती को राजा ने मान लिया। इसके बाद सुबुद्धि ने अपनी बहन के नाम एक चिट्ठी लिखकर राजा के दूतों के द्वारा उसके पास भेज

दी। सुमित्रा ने सोचा कि अपने भाई की सलाह का तिरस्कार करके भठियारिन से मिलकर बातचीत करने के कारण खतरा पैदा हो गया है। यों सोचकर सुमित्रा अपने भाई से मिलने चल पड़ी।

सुदर्शन के राज्य में पहुंचते ही सुमित्रा सीधे राजा के पास पहुँची और बोली–"महाराज आप कृपया यह कर्णफूल देखिये और बताइये कि क्या यह बड़ा क़ीमती है?"

राजा सुदर्शन ने कर्णफूल के रत्नों की जांच करके कहा–"निश्चय ही यह अत्यंत अमूल्य है; पर इसे तुम मुझे क्यों दिखाती हो?"

"महाराज! आप के सेनापति ने इसकी जोड़ी को मेरे यहाँ से चुरा लिया है! आप तो धर्मात्मा हैं! कृपया मेरा कर्णफूल मुझे दिलवा दीजिए।" सुमित्रा ने विनयपूर्वक पूछा।

राजा ने सेनापति को बुला भेजा, सुमित्रा के दोषारोपण को सुनाकर आदेश दिया–"हमने सुना है कि तुमने इस नारी का कर्णफूल चुराया है! उसे इसी वक़्त लौटा दो।"

सेनापति ने विस्मय में आकर कहा–"महाराज! मैं बिलकुल नहीं जानता कि यह युवती कौन है? मैंने अपनी जिंदगी भर में इसका चेहरा तक नहीं देखा है। ऐसी हालत में मैं इसका कर्णफूल कैसे चुरा सकता हूँ?"

तब सुमित्रा ने राजा की ओर मुड़कर कहा–"महाराज! मैं सुबुद्धि की बहन सुमित्रा हूँ। यदि सेनापति ने अपनी ज़िंदगी भर में मुझे देखा तक नहीं है, तो आप ने मेरे भाई को मृत्युदण्ड क्यों सुनाया है?"

इस पर राजा को सेनापति का षड़यंत्र और सुमित्रा की युक्ति समझ में आ गई। तब उसने सेनापति को मृत्यु दण्ड सुनाया, सुबुद्धि को कारागार से मुक्त किया, सुमित्रा के साथ विवाह करके कई वर्षों तक वैभवपूर्वक राज्य किया।

स्थान का प्रभाव

चन्द्रहास नामक बालक अपने बचपन से ही राजा बनने की कामना करता था। इस इच्छा की पूर्ति के लिए उसने मेहनत के साथ अध्ययन किया और सभी राजोचित विद्याओं का अभ्यास किया। कुछ युवकों में अपने प्रति विश्वास पैदा करके उन्हें अपने अनुचर बनाये। निर्जन प्रदेश में नगर बसाकर उसके राजा बनने की इच्छा चन्द्रहास के मन में थी।

चन्द्रहास के एक पुरोहित ने सलाह दी– "राजधानी का निर्माण करते समय उस स्थान के प्रभाव का ख्याल रखना चाहिए।"

चन्द्रहास ने ऐसे प्रदेश की बड़ी खोज की, आखिर उसे एक स्थान उपयुक्त प्रतीत हुआ। उसके देखते-देखते उस प्रदेश में शिकारी कुत्ते खरगोशों का पीछा करते आये, मगर उस स्थान पर पहुँचते ही खरगोश रुक गये और शिकारी कुत्तों पर हमला कर उन्हें भगा दिया। चन्द्रहास ने उस स्थान पर अपनी राजधानी बसाई और उस नगर का नामकरण "खरगोश नगर" किया। उस नगर का राजा चन्द्रहास था। वह नगर लवंग देश की सीमा पर बसा था। इस कारण लवंग देश का राजा चन्द्रहास पर हमला कर बैठा। खरगोश नगर दुर्भेद्य बनाया गया था। वैसे नगर में थोड़े ही सैनिक थे, लेकिन उनमें यह आत्म विश्वास भरा था कि कोई भी शत्रु उन्हें पराजित नहीं कर सकता। आखिर उस युद्ध में लवंग देश का राजा बुरी तरह से हार गया।

कालक्रम में चन्द्रहास के राज्य की सीमा पर के सभी राजा उसके हाथों में हार गये। धीरे धीरे चन्द्रहास के राज्य का विस्तार हुआ और वह चक्रवर्ती बना। चन्द्रहास के एक पुत्र था पद्मसेन।

पद्मसेन ने बचपन में सही ढंग से विद्याभ्यास नहीं किया और युक्त वयस्क के होते-होते वह बुरी लतों का शिकार हो गया ।

उस हालत में चन्द्रहास का देहांत हो गया । इस पर पद्मसेन राजा बन बैठा । मगर उसमें राजनैतिक जिम्मेदारी उठाने की सामर्थ्य नहीं थी । इस कारण उसके मन में भय बना हुआ था, तब मंत्री के पुत्र ने उसे हिम्मत बंधाई–"महाराज, खरगोश नगर के स्थान-प्रभाव के कारण हमें डरने की कोई जरूरत नहीं है ।"

इसके बाद जल्द ही सभी सामंतों को पता चला कि उनका चक्रवर्ती शासन कार्यों में असमर्थ है । फिर क्या था, लवंग देश का सामंत भारी सेना के साथ खरगोश नगर पर चढ़ आया, उस युद्ध में पद्मसेन हार गया और मंत्री के पुत्र के साथ गुप्त रूप से जंगलों में भाग गया ।

पद्मसेन ने अपने मन में सोचा–"स्थान-प्रभाव के कारण राज्य-संपादन करके मेरे पिता चक्रवर्ती बन सके । खरगोशों के द्वारा शिकारी कुत्तों को भगानेवाले स्थान का प्रभाव मेरी रक्षा नहीं कर सका । इसका मतलब है कि मैं खरगोशों से ज्यादा गयाबीता हूँ, मैं असमर्थ हूँ ।"

मंत्री के पुत्र ने समझाया–"महाराज, आप चिंता न कीजिए । आप की पराजय का कारण स्थान का ही प्रभाव है, वरना वहाँ तक खरगोशों को भगाकर आनेवाले शिकारी कुत्ते वहाँ पहुँचते ही लौट गये हैं, तो इसका मतलब है कि खरगोशों को धीरज दिलानेवाला स्थान शिकारी कुत्तों के साहस को पस्त कर पाया है । इससे स्पष्ट है कि आप तो पराक्रमी हैं, मगर स्थान के प्रभाव ने आप के पराक्रम को नष्ट कर डाला है । लेकिन खरगोश जैसा लवंग देश का राजा जीत गया है ।"

तब जाकर पद्मसेन ने भांप लिया कि जब स्थान का प्रभाव दोनों ओर से पैनी तलवार के समान है, तब उस पर ज्यादा विश्वास करने की अपेक्षा मनुष्यों की सामर्थ्य पर विश्वास करना कहीं उत्तम है ।

नौकरों से काम!

रमाप्रसाद की पुत्री सुजाता की शादी हो गई थी, मगर वह अब तक ससुराल नहीं गई थी। इस बीच सक्रांति पर्व आ पड़ा। उस त्योहार के समय रमाप्रसाद ने अपने दामाद के साथ अपने समधी साहब जानकीनाथ को घर आमंत्रित किया। जानकीनाथ अपनी पत्नी और पुत्र को साथ ले रमाप्रसाद के घर आ पहुँचा।

शायद रमाप्रसाद बड़ा धनी था, इसलिए उसका मकान भी काफी विशाल और सुंदर था। घर भर में नौकर-चाकर थे। सिर्फ़ पुकारने भर की देरी थी, दूसरे ही क्षण एक साथ कई नौकर हाज़िर हो जाते थे। रमाप्रसाद ने जानकीनाथ की खूब आवभगत की।

दूसरे दिन सवेरे जानकीनाथ ने नींद से जागते ही पिछवाड़े में होहल्ला मचते देखा। जानकीनाथ ने पिछवाड़े की तरफ़ झांककर देखा। वहाँ पर रमाप्रसाद नौकरों को खूब डांट रहा था।

रमाप्रसाद के नौकर ऐसे दीख रहे थे जैसे कि उनके मालिक की डांट-डपट की परवाह तक न करते हो! जानकीनाथ को इस बात का आश्चर्य हुआ कि ऐसे धनी मालिक के प्रति नौकर उपेक्षा का भाव क्यों दिखाते हैं? आखिर रमाप्रसाद की पत्नी ने दखल देकर समझाया—"हमारे घर रिश्तेदार भी आये हुए हैं, इसे देख न मालूम वे लोग क्या सोचेंगे?" तब जाकर झगड़ा शांत हो गया।

जानकीनाथ को स्पष्ट मालूम हुआ कि इस झगड़े का कारण रमाप्रसाद ही है। वे हर छोटी सी बात में दखल देकर नौकरों को डांट-डपट देते हैं जिससे उनके प्रति नौकरों के मन में श्रद्धा का भाव नहीं रह गया है।

शिवकुमार

थोड़ी देर बाद रमाप्रसाद ने जानकीनाथ के पास पहुँचकर अपना आक्रोश प्रकट किया–"समधी साहब! ये कमबख्त नौकर ठीक से काम नहीं करते! मैं इन लोगों को समझाते-समझाते तंग आ गया हूँ।"

जानकीनाथ ने कहा–"हाँ, हाँ! आप सच कहते हैं।" मगर उसने रमाप्रसाद की तृटि नहीं बताई। क्यों कि वह बड़ा ही व्यवहारशील व्यक्ति था। वैसे जानकीनाथ कोई लखपति तो नहीं है, मगर संपन्न परिवार का जरूर था। उसके घर में भी तीन-चार नौकर थे। उनके साथ वह कभी झगड़ा नहीं मोल लेता था। न उन्हें डांटता-डपटता ही था। उसके प्रति उसके नौकरों के मन में श्रद्धा और भक्ति थी।

जानकीनाथ रमाप्रसाद के घर चार-पाँच दिन रहा। पर रमाप्रसाद रोज अपने नौकरों पर अनावश्यक टूट पड़ता था। जानकीनाथ को यह आदत बड़ी बुरी लगी। उसने सोचा कि रमाप्रसाद की इस आदत को सुधारना जरूरी है।

त्योहार समाप्त हो गया। जानकीनाथ जब अपनी बहू को अपने घर लिवा ले जाने लगा तब उसने रमाप्रसाद और उसकी पत्नी को भी अपने घर आने का निमंत्रण दिया। रमाप्रसाद ने भी मान लिया।

जानकीनाथ का घर रमाप्रसाद के घर जैसे विशाल न था, पर साफ़-सुथरा था,
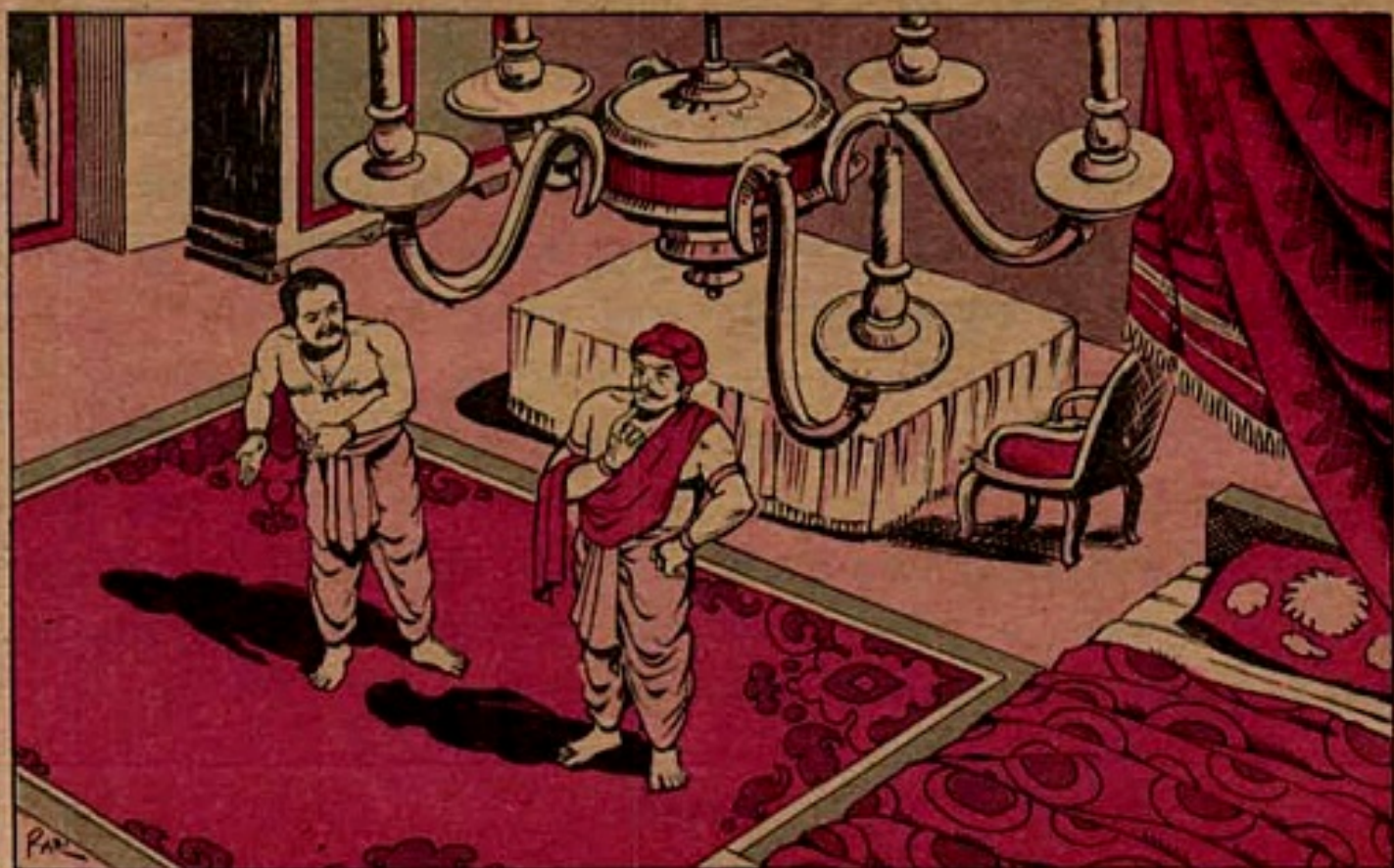
अच्छे ढंग से सजाया गया था, आंगन में फुलवारी थी और पिछवाड़े में तरकारी की क्यारियाँ थीं। इनकी देखभाल नौकर-चाकर करते थे। नौकर अतिथियों की बड़ी इज्जत करते और उनकी सेवा-टहल के लिए हर वक़्त मौजूद रहा करते थे। नौकरों तथा घर के मालिक के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा-टंटा होते रमाप्रसाद और उसकी पत्नी ने कभी देखा तक नहीं। रमाप्रसाद इस बात की कल्पना तक न कर पाये कि नौकर अपने मालिक के प्रति जो विनय दिखाते हैं, इसका क्या कारण हो सकता है?"

एक दिन जानकीनाथ अपने कमरे में बैठे रमाप्रसाद के साथ बातचीत कर रहा था, तब उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसका कमरा साफ़ नहीं किया गया है। उसे अपने नौकरों पर क्रोध भी आ गया, मगर उसने किसी नौकर को बुलाकर डांटा नहीं। इतने में एक नौकर उधर से आ निकला। "सुनो, उस अलमारी को उठाकर तुम लोग आगेवाले कमरे में रख दो।" यों उन्हें आदेश दे जानकीनाथ ने झाड़ू लिया और वह खुद कमरा साफ़ करने लगा।

दूसरे ही क्षण नौकर चिल्लाकर बोला—"मालिक! आप यह क्या करते हैं? हम लोग यह कमरा साफ़ करना भूल गये हैं, कृपया क्षमा कर दीजिए।" यों माफ़ी माँगकर वह नौकर झाड़ू ले कमरा साफ़ करने लगा।

जानकीनाथ वास्तव में यही चाहता था। रमाप्रसाद ने जानकीनाथ के इस अच्छे व्यवहार को भांप लिया, उसने कहा—"समधी साहब! मैंने अभी अभी समझ लिया कि नौकरों से कहीं अधिक कुशलतापूर्ण व्यवहार हमें ही करना है। कथनी की अपेक्षा करनी को देख नौकर अपनी भूलों को सुधार लेते हैं।"

"महाशय! आप भी इसी प्रकार अपने नौकरों से काम ले सकते हैं। उनके साथ झगड़ना ठीक नहीं है।" जानकीनाथ ने हँसते हुए समझाया।

जो ऋण चुक गया

एक गाँव में एक चर्मकार रहा करता था, उसके एक पुत्री थी। वह दिन भर मेहनत करता और थोड़ा-बहुत बचाकर अपनी बेटी की शादी के वास्ते पर्याप्त धन बचा सका। आखिर चर्मकार की बेटी की शादी का रिश्ता पक्का हो गया, लेकिन मुहूर्त के दो दिन पहले उसके घर में डाका पड़ गया, उसने जो कुछ धन बचाकर रखा था, डाकू लूटकर ले गये। अपनी बेटी का रिश्ता टूटते देख वह जमीन पर लोट-लोटकर रोने लगा।

उस वक़्त उधर से निकलनेवाले गंगा प्रसाद नामक एक धनी किसान ने चर्मकार की हालत जान ली, उसने सांत्वना के स्वर में कहा—"सुनो, तुम्हें चिंता करने की कोई बात नहीं है, तुम्हारा जितना धन चोरी गया, उतना मैं उधार में दे दूंगा, लेकिन मेरा उधार तुम्हें जल्दी चुकाना होगा।"

गंगाप्रसाद को उसके गाँव के लोग नर रूपधारी राक्षस और पत्थर दिल का मानते थे। फिर भी उस हालत में चर्मकार को गंगाप्रसाद साक्षात् देवता के जैसे प्रतीत हुआ। वह खुशी से भर उठा और गंगाप्रसाद के पैरों पर गिरकर बोला—"मालिक, मैं अपने चमड़े से जूते सिलाकर ही सही, आप का ऋण चुका लूंगा।"

इसके बाद गंगाप्रसाद ने गाँव के मुखिये के सामने ऋण-पत्र लिखकर चर्मकार के अंगूठे का निशाना लगवाया, तब रुपये दे दिये। फिर यथा समय चर्मकार की बेटी की शादी संपन्न हो गई।

दस दिन बीत गये। ग्यारहवें दिन गंगाप्रसाद ने चर्मकार को बुलवाकर अपना ऋण चुकाने पर जोर दिया। "मालिक! दस दिन के अन्दर में इतनी रक़म कैसे चुका सकता हूँ?" चर्मकार ने पूछा।

विद्यावती देवी

"यह सब मैं कुछ नहीं जानता! कल शाम तक अगर तुमने मेरा ऋण नहीं चुकाया तो तुम्हारी बीबी और बच्चों के साथ मैं बेगारी करवा लूँगा और तुम्हारे घर पर क़ब्ज़ा कर लूँगा। यदि ऐसा नहीं चाहते हो, तो तुम अपने चमड़े से मुझे जूते सिलवाकर दे दो।"

ये बातें सुनने पर चर्मकार को लगा कि उस पर फिर से आफ़त आ पड़ी है। उसकी परेशानी देख पड़ोसियों ने उसे समझाया—"तुम गाँव के मुखिये के पास पहुँचकर उनकी सलाह ले लो। वे गरीबों की मदद किया करते हैं।"

चर्मकार ने मुखिये को गंगाप्रसाद की नई चाल का परिचय देकर कहा—"सरकार, आप ही बताइये कि मैं इस हालत में क्या चोरी करूँ? या बेगारी? मुझे आप जैसे-तैसे किनारे लगा दीजिए, यह आप ही के जिम्मे है!"

मुखिया तो गंगाप्रसाद की करतूतों से भलीभांति परिचित थे। उन्हें चर्मकार पर दया आ गई, थोड़ी देर सोचकर उन्होंने चर्मकार को कोई सलाह दी। उसने पूछा—"महाशय, अगर गंगाप्रसादजी हो-हल्ला मचायेंगे तो मैं क्या करूँ?"

"उन्हें मेरे पास लिवा लाओ! गवाही के लिए तुम अपने समधी को भी साथ ले आओ।" मुखिये ने समझाया।

मियाद के पूरा होने पर भी जब चर्मकार ने कर्ज नहीं चुकाया, तब
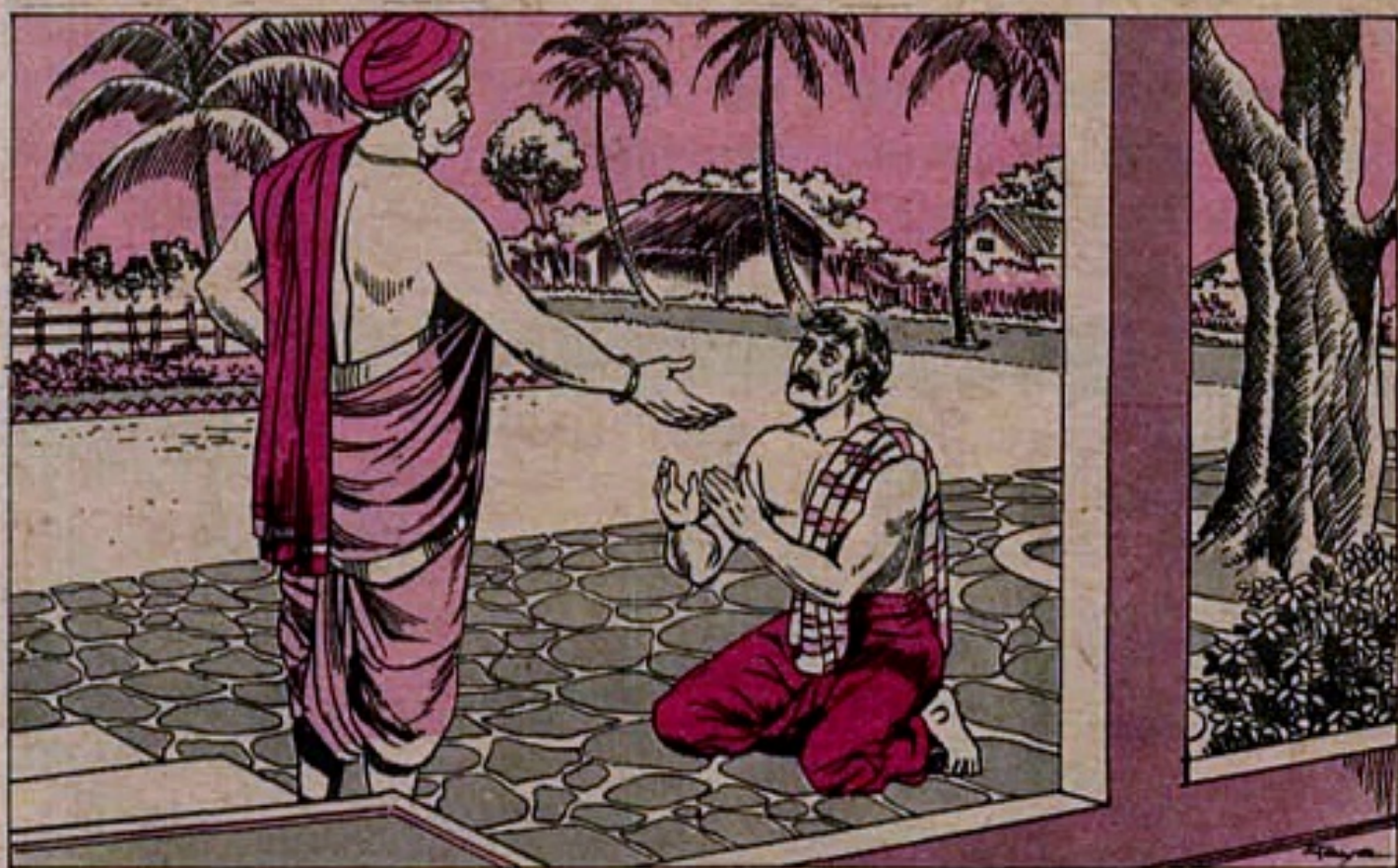
गंगाप्रसाद ने ऋण-पत्र लाकर मुखिये से शिकायत की।

मुखिये ने चर्मकार को बुलवाकर पूछा–"गंगाप्रसाद का ऋण चुकाने के लिए तुम्हारे घर भर के लोग उनके घर बेगारी करोगे? या तुम अपना घर बेचकर उनका कर्ज चुका ओगे? अथवा अपने चमड़े से उनके वास्ते जूतें सिलवाकर दे दोगे?"

"सरकार! मैं अपने चमड़े से जूते सिलवाकर दे दूंगा।" चर्मकार ने कहा।

"गंगाप्रसादजी! क्या आप इसकी शर्त को मानते हैं?" मुखिये ने पूछा।

"मुझे स्वीकार है।" गंगाप्रसाद ने जवाब दिया।

दूसरे ही क्षण चर्मकार ने अपनी गठरी खोलकर जूतों की एक जोड़ी गंगाप्रसाद के सामने रखा और कहा–"महाशय! अब आप का ऋण चुक गया है!"

गंगाप्रसाद चिल्लाकर बोला–"अबे, तुम अपनी धूर्तता मन दिखाओ! तुमने अपने चमड़े से जूते सिलवाने की बात कही, अब जानवर के चमड़े से सिये गये जूते देते हो? मुखिया साहब देखिये, यह मुझको कैसे बेवकूफ़ बनाना चाहता है?"

मुखिये ने गंगाप्रसाद की बातें सुन आश्चर्य का अभिनय करते हुए कहा–"चर्मकार ने इसमें अपनी धूर्तता कहाँ दिखाई? उसने जूते बनाकर देने की जो बात कही, पर उसके बदन के चमड़े से नहीं! अगर वह चमड़ा उसके द्वारा खरीदे गये जानवरों का है तो इसका मतलब है, वह चमड़ा उसी का ही है! इसलिए वे जूते देकर वह अपने ऋण से मुक्त हो गया है! मैं इस बार आप को माफ़ कर देता हूँ! फिर आइंदा आप ने यों लोगों को सताया तो मुझे आप पर कड़ी कार्रवाई करनी पड़ेगी!"

इस फैसले से चर्मकार आफ़त से बच गया। सारे गाँववालों को पता चल गया कि चर्मकार ने गंगाप्रसाद को अच्छा सबक़ सिखाया है। इसके बाद गंगाप्रसाद ने फिर किसी को भी सताया नहीं।

देवी भागवत

धनव के पुत्र रंभ और करंभ के बहुत दिन तक कोई संतान न हुई। इस कारण दोनों ने दीर्घकाल तक भयंकर तपस्या की। करंभ ने पंचनद तीर्थ में गोता लगाकर तपस्या की तो रंभ ने एक पेड़ पर चढ़कर।

यदि कोई भी व्यक्ति तप करता है, तो इंद्र के बदन में पसीना छूटने लगता है। इसलिए उन्होंने मगर मच्छ के रूप में पंचनद में प्रवेश करके करंभ को मार डाला। अपने छोटे भाई की मृत्यु पर रंभ शोक में डूब गया और अग्नि को अपना सिर अर्पित करने के लिए तलवार उठाई।

इस पर अग्नि ने प्रत्यक्ष होकर पूछा– "तुम अपनी आत्महत्या क्यों करते हो? उसके द्वारा तुम्हें न इह मिलेगा और न पर लोक! मैं तुम्हारी तपस्या पर प्रसन्न हो गया हूँ। तुम कोई वर माँग लो।"

"भगवान, अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे एक पुत्र प्रदान कीजिए! पर वह कामरूपी हो, देवतां, दानव और मानव उसे कभी पराजित न कर सके।" रंभ ने कहा।

"अच्छी बात है, ऐसा ही होगा। तुम जिसके साथ प्यार करोगे, उसी के द्वारा तुम्हें पुत्र पैदा होगा।" यों समझाकर अग्निदेव अदृश्य हो गये।

रंभ अपनी तपस्या समाप्त कर लौट रहा था, तब यक्षों के अधीन में स्थित एक सुंदर प्रदेश में एक भैंस को देखा और वह

१४. महिषासुर का संहार

उस पर मोहित हुआ। वह महिषि रंभ के द्वारा गर्भ धारण कर उसके साथ पाताल को चली आई।

वहाँ पर उस महिषि पर एक और महिष मोहित हुआ। इसे देख रंभ क्रोध में आ गया और उस पर प्रहार किया। वह महिष (भैंसा) रंभ पर अपने सींग चलाया और उसे ऊपर उठाकर मार डाला। इसे देख वह महिषि रंभ के साथ चिता में जलकर मर गई। उन ज्वालाओं में से दो राक्षस निकले जिनके नाम महिष और रक्तबीज हैं।

इसके बाद राक्षसों ने महिषासुर को अपना राजा चुना। उसके अधीन चिक्षुर, ताम्र, असिलोम, सुदर्क, बिडाल, बाष्कल, त्रिणेत्र और कालबंधक नामक सेनापति थे। उनकी मदद से महिषासुर सारे भूमण्डल पर शासन करते हुए यज्ञ ध्वंस करने लगा। उसके समय में ही देवता और दानवों के बीच भयंकर युद्ध हुआ।

उस युद्ध के पूर्व ही महिष ने कांचन पर्वत पर बड़ी तपस्या करके ब्रह्मदेव को प्रत्यक्ष किया और उनसे वर माँगा– "महात्मा! मुझे ऐसा वरदान दीजिए जिससे कभी मेरी मृत्यु न हो।"

इस पर ब्रह्मा ने समझाया–"जो लोग जन्म लेते हैं, वे सब मरते भी हैं। जो मरते हैं, उन्हें फिर से जन्म लेना पड़ता है। ऐसी हालत में मैं तुम्हें बिना मृत्यु का वर कैसे दे सकता हूँ? पृथ्वी, समुद्र और पहाड़ भी नाश को प्राप्त हो जाते हैं। इसलिए तुम कोई दूसरा वर माँग लो, ज़रूर दूंगा।"

इस पर महिष ने कहा–"भगवन, कोई भी नारी मेरा वध नहीं कर सकती, इसलिए मुझ ऐसा वरदान दीजिए जिससे देवता, दानव और मानव जाति के किसी भी पुरुष के हाथों में मेरी मृत्यु न हो।"

"अच्छी बात है! पर तुम्हारी मृत्यु कभी न कभी एक नारी के ही द्वारा होगी।" यों वर देकर ब्रह्मा अदृश्य हो गये।

यह वर पाने के बाद महिष ने स्वर्ग पर अधिकार करने का निश्चय किया और एक सेवक को बुलाकर आदेश दिया– "देखो, तुम स्वर्ग में जाकर इंद्र से पता लगाओ, वह मेरे साथ युद्ध करेगा या मेरी शरण में आकर मुझे स्वर्ग प्रदान करेगा?"

महिष का दूत स्वर्ग में पहुँचा, इंद्र के दर्शन करके बोला–"हे देवेन्द्र! मैं महिष का दूत हूँ। आप अनावश्यक रोष में न आकर अपने नगर को महिष के हाथ सौंप दीजिए और उनका सेवक बन जायेंगे या उनके साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो जायेंगे? इसी वक़्त अपना निर्णय दीजिए।"

"अरे दुष्ट! तुम्हारे मालिक का ऐसा घमण्ड? मेरे सामने आकर यों बकते हो? मैं उसकी खबर लूंगा! तुम दूत बनकर आये हो, इसलिए बच गये! उसको मेरा संदेशा यों सुना दो: "अरे भैंसे! युद्ध में मुझे हराने की इच्छा तुम्हारे मन में पैदा हो गई है? घास चरकर तुम्हें चर्बी चढ़ आई है? मैं जानता हूँ कि तुम भैंसे का स्वरूप हो! मैं तुम्हारे सींग उखाड़कर धनुष बनवा लूंगा।" इन्द्र ने कहा।

दूत महिष के पास लौटकर बोला– "महाराज! इन्द्र ने आप की जो निंदा की, उसे बताने में मुझे डर लगता है। मैं आप को संतुष्ट करने के लिए झूठ कैसे बोल सकता हूँ?" इन शब्दों के साथ दूत ने महिष को इन्द्र का संदेशा सुनाया।
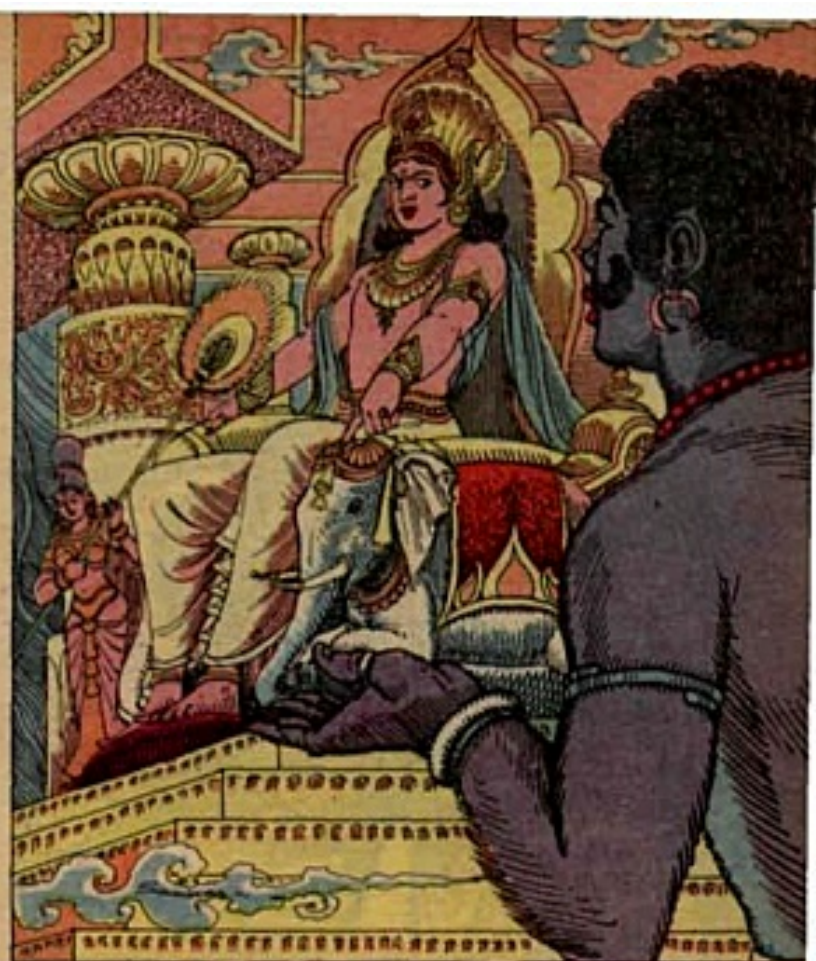
महिष का क्रोध भड़क उठा। उसने पूँछ झाड़कर आँखें लाल करके कहा–"इस अपराध के लिए क्या मैं इन्द्र का वध कर डालूं या नहीं? उसकी शेखी तो दुर्बल व्यक्तियों, आँख बंद करके तपस्या करनेवालों तथा अन्य लोगों की पत्नियों के सामने चल सकती है! क्या उस दुष्ट ने यह सोच रखा है कि युद्ध के माने अप्सराओं को भेजकर तपोभंग करना है? मेरे सामने एक करोड़ इंद्र भी आ जावे, तो मैं उनके कलेजे फाड़ डालूंगा। वह समुचि का वध करनेवाला विश्वासघातक है! उसे मैं क्षमा

कर दूँ तो बुद्धिमान लोग प्रसन्न न होंगे। यही नहीं, इसका साथ देनेवाले विष्णु भी ऐसे ही व्यक्ति हैं! उन्होंने धोखा देकर वराह के रूप में हिराण्याक्ष का तथा नरसिंह के रूप में हिरण्यकश्यप का वध किया, इसलिए इन्द्र और विष्णु पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं है।"

इसके बाद महिष ने निश्चय किया कि अष्ट दिकपाल तथा देवताओं को हराकर उनके द्वारा भोगनेवाले सुखों को राक्षसों को प्राप्त कराना चाहिए और अपने सेवकों को आदेश दिया—"कोई भी पुरुष मेरा वध नहीं कर सकता। तुम लोग सभी राक्षसों को युद्ध के लिए तैयार कर दो। मैं सभी शत्रुओं को अपने खुरों और सींगों से मार सकता हूँ। तुम सब स्वर्ग के सुख भोग सकते हो।"

इस बीच इन्द्र ने दिकपालों का सम्मेलन करके उन्हें यों समझाया—"रंभ का पुत्र महिष ब्रह्मा के द्वारा वर प्राप्त करके उस अहंकार से हमारे साथ युद्ध करने के लिए अपनी सेनाओं को तैयार कर रहा है। उसका कहना है कि वह स्वर्ग पर अधिकार कर लेगा। उसने अपने दूत के द्वारा कहला भेजा है कि मैं हार मानकर उसका सेवक बन जाऊँ या उसके साथ युद्ध करूँ! यह निर्णय करके उसको सूचित करूँ? इसलिए आप लोग बताइये कि इस वक़्त हमारा कर्तव्य क्या है? शत्रु चाहे जैसा भी बलवान क्यों न हो, उसे क्षमा नहीं करनी चाहिए! विजय और पराजय ईश्वर के अधीन हैं, फिर भी हमें तो अपना प्रयत्न करना चाहिए। वैसे समझौता कर लेना अच्छी बात है, मगर ऐसे दुष्टों के साथ संधि करने पर उसका परिणाम उल्टा होता है। युद्ध करना हो तो हमारी और दुश्मन की सैनिक शक्ति का अंदाज़ा लेना जरूरी है। इसलिए हम इसका पता लगाने के लिए एक व्यक्ति को भेज देंगे।"

इंद्र का दूत महिष के पास पहुँचा और लौटकर महिष की सैनिक शक्ति

का परिचय दिया। इस पर इन्द्र विस्मय में आ गये, अपने पुरोहित को बुलाकर पूछा–"महिष अपार सेना के साथ हम पर हमला करने जा रहा है! अब आप ही कोई उपाय बताइये कि हम क्या करें?"

इन्द्र को घबड़ाये हुए देख देवपुरोहित बृहस्पति ने समझाया–"विपदा के समय साहस को नहीं खोना चाहिए। आप धैर्य धारण कीजिए! जो होना है, सो होकर ही रहेगा। फिर भी हमें यथा शक्ति प्रयत्न करना है। इसी वास्ते ही तो महर्षि मोक्ष पाने के लिए तप करते हैं? केवल ईश्वर की कृपा पर निर्भर रहें तो काम न चलेगा! हमारे प्रयत्न के बावजूद भी अगर फल न मिला तो वह ईश्वरेच्छा ही कही जाएगी।"

इस पर इन्द्र ने कहा–"गुरुदेव! प्रयत्न के विना कार्यसिद्धि नहीं होती! जैसे यतियों के लिए ज्ञान और ब्राह्मणों के लिए संतुष्टि प्रधान होता है, वैसे राजाओं के लिए शत्रु का संहार मुख्य होता है। आप यदि उचित सलाह दें तो मैं युद्ध करूँगा! मेरे सहायक केवल आप, मेरा वज्रायुध तथा हरिहर ही तो हैं!"

बृहस्पति ने इन्द्र से कहा–"मैं आप को युद्ध करने व न करने की सलाह नहीं दे सकता। आप सब मुझको महान् मेधावी मानते हैं। लेकिन जब चन्द्रमा मेरी पत्नी को उठाकर ले गया, तब मेरी बुद्धिमत्ता ने कहाँ काम दिया? इसलिए आप लोग अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार कोई उपाय सोच लीजिए।"

इस पर इंद्र ब्रह्मा की शरण में गये। बोले–"महानुभाव! महिष मद में आकर स्वर्ग पर अपनी सेना के साथ हमला करने आ रहा है। इसे देख मुझे डर लगता है। मेरी यह बुरी हालत देख कुछ तो कीजिए।"

इंद्र की बातें सुन ब्रह्मा बोले–"हम लोग शिवजी और विष्णु को साथ लेकर युद्ध करें तो अच्छा होगा। चलिए, हम पहले कैलास में जायेंगे।"

इसके बाद दोनों ने कैलास जाकर शिवजी को सारा समाचार सुनाया। तब तीनों मिलकर विष्णु के पास पहुँचे। सब ने मिलकर महिष के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। हँस पर ब्रह्मा, गरुड़ पर विष्णु, बैल पर शिवजी, मयूर पर कार्तिकेय और हाथी पर इंद्र सवार हो युद्ध के लिए चल पड़े। इस प्रकार देवताओं तथा राक्षसों की सेनाओं के बीच युद्ध शुरू हुआ।

भयंकर युद्ध हुआ। दिकपाल, इंद्र और त्रिमूर्तियों ने अपने पराक्रम का परिचय दिया, फिर भी वे महिष के सामने टिक न पाये, तब स्वर्ग पर महिष का अधिकार हो गया। महिष ने सिंहासन पर बैठकर सभी मुख्य पदों पर राक्षसों को नियुक्त किया, देवताओं के खजानों पर अपना अधिकार कर लिया, स्वर्ग-सुखों का अनुभव करते शासन करने लगा। देवता लोग पहाड़ों और जंगलों में भाग गये, नाना प्रकार की यातनाएँ झेलने लगे।

आखिर देवता ब्रह्मा के यहाँ पहुँचकर बोले–"महिषासुर ने हमारी बुरी हालत कर दी है। आप तो हमारे लिए पितृतुल्य हैं। हमारी रक्षा कीजिए।"

इस पर ब्रह्मा ने समझाया–"मैं कर ही क्या सकता हूँ? महिषासुर ने किसी भी पुरुष के द्वारा अपनी मृत्यु न होने का वर प्राप्त कर लिया है। उसका वध तो कोई नारी ही कर सकती है। चलो, हम पहले शिवजी से तथा बाद को विष्णु से सलाह लेंगे।"

इसके बाद ब्रह्मा के साथ सभी देवता शिवजी के पास पहुँचे। शिवजी ने उन लोगों से पूछा–"बताइये, आप लोग मुझसे क्या चाहते हैं?"

"आप से कोई बात छिपी नहीं है। महिषासुर ने स्वर्ग पर अधिकार करके इंद्र और देवताओं को भगाया है। वे आप की मदद चाहते हैं।" ब्रह्मा ने उत्तर दिया।

शिवजी ने मुस्कुराकर कहा–"आप ही तो देवताओं के इस अनर्थ के कारणभूत हैं। आप के वरदान के कारण कोई भी पुरुष उसे मार नहीं सकता। तो फिर उसका वध करने के लिए हम किस नारी को भेजें? क्या आप अपनी पत्नी को भेजेंगे? या मैं अपनी पत्नी को भेज दूं? अथवा इंद्र की पत्नी जायेंगी? हमारी पत्नियों में से एक भी तो युद्ध करना नहीं जानती हैं! इसलिए हम इसका उपाय विष्णुजी से पूछेंगे। वे मुझसे भी ज़्यादा बुद्धिमत्ता रखते हैं।"

इसके बाद सब लोग विष्णु के पास पहुँचे। विष्णु ने सारा वृत्तांत सुनकर कहा–"हम सब महिषासुर के साथ युद्ध करके हार चुके हैं। अगर उसका वध एक नारी के ही द्वारा हो सकता है तो हम लोग अपने सारे तेज़ के साथ एक नारी की सृष्टि करेंगे, उसे हमारे सारे आयुध देकर उसके द्वारा महिषासुर का वध करायेंगे।"

विष्णु के मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि सभी देवताओं से तरह-तरह के तेज़ फूट निकले, क्रमश: सब मिलकर अट्ठारह हाथोंवाली एक नारी तैयार हो गई। देवताओं ने उनके हाथों में अपने अपने आयुध रखे।

इस पर उस नारी ने देवताओं से कहा–"आप लोग डरियेगा नहीं, मैं उस राक्षस का वध करूँगी।" इन शब्दों के

साथ वह ऐसा गरज उठीं कि सारी दिशाएँ उस गरज़न से गूँज उठी ।

उस ध्वनि को सुन महिषासुर ने पूछा– "यह ध्वनि किसने की? तुम लोग अभी जाकर उसे पकड़ लाओ! मेरे हाथों में मार खानेवाले देवताओं में ऐसी हिम्मत कहाँ से आ गई?"

राक्षसों ने प्रवेश करके महादेवी के उस अवतार को देखा, घबड़ाकर महिषासुर से बोले–"महाराज! कोई नारी सिंह पर सवार हो आ पहुँची है । उसके सारे बदन पर आभूषण हैं । अट्ठारह हाथों में आयुध हैं । उसे देखने पर हमें डर लगता है ।"

इस पर महिष ने अपने मंत्री से कहा– "तुम लोग किसी तरह से उस युवती को पकड़ लाओ । मैं उसे अपनी पट्ट महिषी बना लूँगा ।"

मंत्री ने प्रवेश करके दूर पर खड़े हो देवी से कहा–"माईजी! आप कौन हैं? यहाँ पर क्यों आई हैं? समस्त लोकों के शासक महिषासुर आप को चाहते हैं?"

देवी ने मुस्कुराकर उत्तर दिया– "मैं उसी का वध करने आई हूँ । तुम तो भले आदमी मालूम होते हो! मैं तुम्हारा वध नहीं करूँगी । तुम अभी जाकर मेरा संदेशा अपने राजा को सुनाओ ।"

महिषासुर अपने मंत्री की बातों पर विश्वास न कर पाया । उसने समझौता करने के लिए अपने सेनापति ताम्र को देवी के पास भेजा । देवी ने उसका वध कर डाला । इसके बाद महिषासुर ने अपने अन्य सेनापतियों को युद्ध करने भेजा । वे सभी लोग देवी के हाथों में मर गये । अंत में महिषासुर ही देवी के साथ युद्ध करने आया । दोनों के बीच युद्ध हुआ । महिषासुर कामरूपी था, उसने अनेक रूप धारण कर दारुण युद्ध किया । अंत में देवी ने अपने चक्रायुध से उसका सर काट डाला ।

देवताओं ने आनंदित हो देवी का स्तोत्र किया ।

पड़ोसी झंझट

मालती और नंदना के बीच गहरी मैत्री थी। नंदना के पिता ने शहर में जाकर कोई व्यापार शुरू किया, इस कारण उसका परिवार शहर चला गया। अपनी सखी मालती को छोड़कर जाते वक़्त नंदना ने उसे एक बार शहर में आने का अनुरोध किया और शहर पहुँचने के बाद अपना पता भी लिख भेजा।

थोड़े दिन गुजर गये। मालती के मन में नंदना को देखने की इच्छा हुई। एक दिन मालती के गाँव का एक व्यापारी शहर जा रहा था, उसने मालती को नंदना के मकान के समीप उतार दिया और वह अपनी गाड़ी हांकवाकर चला गया।

मालती ने बड़ी आसानी से नंदना के घर का पता लगाया, लेकिन नंदना के घर पर ताला लगा था। उसने पड़ोसी घर के निकट पहुँचकर भीतर झांककर देखा।

उस घर की स्त्री ने मालती से पूछा– "बेटी, तुम कौन हो? क्या चाहती हो?"

मालती ने उस स्त्री को अपनी हालत बताई और पूछा–"नंदना कहाँ गई है? और कब घर लौटेगी?"

उस औरत ने समझाया–"बेटी! नंदना के किसी रिश्तेदार के घर शादी है, इसलिए उसका पूरा परिवार शादी में गया हुआ है। संध्या तक लौट सकते हैं। तब तक तुम हमारे घर में रह जाओ, तुम अकेली इस शहर में कहाँ रह सकती हो?"

ये बातें सुनने पर मालती की जान में जान आ गई। मालती का पिता बराबर उसे समझाया करता था कि पहले ही सूचना दिये बिना किसी के घर नहीं जाना चाहिए। अब मालती की समझ में आ गया कि वे ऐसा क्यों कहा करते थे।

विश्वनाथ गर्ग

पड़ोसी औरत के एक कन्या थी। उसका नाम जानकी है। जानकी और मालती के बीच जल्द ही मैत्री हो गई। वैसे जानकी के पिता के कोई नौकरी नहीं है। अच्छी खासी आमदनी भी नहीं है फिर भी एक अपरिचिता के साथ उनका यह आदर-सत्कार देख मालती उन लोगों के उस व्यवहार पर काफी प्रभावित हुई। उस दिन शाम को जानकी की एक सखी की शादी की दावत थी। मगर जानकी दावत में जाने में सकुचा रही थी।

जानकी अपनी माँ से बोली–"माँ, मैं उस दावत में नहीं जाऊँगी। उस शादी में सब संपन्न लोग आते हैं। मुझे तो पहनने के लिए कोई अच्छी साड़ी तक नहीं है। गहने पहने बिना उस दावत में जाऊँ तो लोग मुझे कोई नौकरानी समझेंगे।"

ये बातें सुनने पर मालती को जानकी पर दया आई। उसने अपने संदूक से रेशमी साड़ी निकालकर दे दी, गहने सजाकर बोली–"बहन जानकी! तुम उस दावत में जरूर जाओ।" इस पर जानकी ने कोई आपत्ति नहीं उठाई। चुपचाप साड़ी व गहने पहनकर दावत में चली गई। संध्या हुई, रात होने को थी, पर शादी में गया हुआ नंदना का परिवार लौटकर नहीं आया। दावत में गई जानकी भी लौटी नहीं जानकी की खोज में उसका पिता चल पड़ा, पर दालान में गिरे एक कागज के टुकड़े को हाथ में लेकर पढ़ा और चीख उठा।

मालती ने झट से जानकी के पिता के हाथ से वह कागज़ लेकर पढ़ा। उसमें यों लिखा हुआ था–"माँ, मुझे, आज ही पता चला कि गहने एक औरत के लिए दुश्मन होते हैं। मैं दावत से लौट रही थी, तब एक संकरीली गली में चार गुंडों ने छुरी दिखाकर मेरे सारे गहने लूट लिये। मैं मालती को अपना चेहरा कैसे दिखा सकती हूँ? पिताजी क्रोध में आकर मेरा गला घोंट देंगे। इसीलिए मैं कहीं चली जा रही हूँ। मेरी खोज मत करना।"

उस चिट्ठी को पढ़ते ही मालती रो पड़ी। कहीं जानकी कोई अनुचित कार्य न कर बैठेगी? गहनों से भी ज्यादा जान क़ीमती होती है न?

चिट्ठी पढ़कर जानकी की माँ रो पड़ी। जानकी के पिता ने मालती को समझाया– "बेटी, मैं जैसे-तैसे थोड़े दिनों में तुम्हारे गहनों का मूल्य चुका लूँगा।" यों कहते वह अपने आँसू पोंछने लगा।

"सुनिये, आप मेरे गहनों की चिंता न कीजिए। मुझे गहनों का मूल्य चुकाने की ज़रूरत नहीं है। पहले आप जानकी की खोज करने के लिए आदमी भेज दीजिए। कल रात को अगर आप मुझे आश्रय न देते तो शायद ये डाकू मेरे गहने लूट लेते।" मालती ने सहानुभूति दिखाई। इसके बाद जानकी का पिता अपनी बेटी की खोज में चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद उस गली में किसी गाड़ी के रुकने की आहट हुई। इस पर मालती और जानकी की माँ बड़ी आतुरता के साथ बाहर आई। नंदना का सारा परिवार उस गाड़ी से उतर पड़ा। पड़ोसी मकान की ड्योढ़ी पर खड़ी मालती को देखते ही नंदना आश्चर्य में आ गई। उसने दौड़कर मालती के साथ आलिंगन किया। इसके बाद मालती अपने संदूक़ के साथ नंदना के घर में आ गई।

मालती के भीतर प्रवेश करते ही नंदना ने कहा–"मालती, तुम पहले अपना संदूक़

खोलकर जाँच कर देख लो, कहीं तुम्हारा पूरा सामान है या नहीं? तुम्हारी कहीं इन चोरों के दल से ही दोस्ती हो गई?"

मालती ने चकित होकर नंदना को सारा वृत्तांत सुनाया और दुख भरे स्वर में कहा-"नंदना, तुम भूल करती हो! ये लोग बेचारे बड़े ही अच्छे हैं! मेरी वजह से जानकी कहीं चली गई है।"

नंदना ने कड़ककर कहा-"वह कहीं नहीं जाएगी! मजे से अपने रिश्तेदारों के घर पहुँच गई होगी। यह सब एक नाटक है। शायद तुम शहर में होनेवाली धोखाधड़ी को नहीं जानती। मीठे शब्दों में ही गला घोंट देते हैं। खासकर इस परिवार के बारे में अड़ोस-पड़ोस के सभी लोग अच्छी तरह से जानते हैं। हम लोग थोड़ा भी असावधान रहेंगे तो कपड़े-बर्तन तक हड़प लेते हैं। हम लोग इनसे तंग आ गये हैं। क्या तुमने यह भी सोचने का प्रयत्न नहीं किया कि जब गुंडों ने जानकी के गहने लूटे, तब उसे चिट्ठी लिखने के लिए क़लम और कागज कहाँ से और कैसे मिले? आसानी से धोखा खाने के लिए तुम उन्हें जो मिल गई हो न?"

इस पर मालती गुस्से में आ गई। उसने नंदना से कहा-"नंदना, मैं गाँव की लड़की भले ही होऊँ, इस शहर के दगाबाजों के खेल मेरे सामने चलने के नहीं, पर मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है!" इन शब्दों के साथ उसने अपनी योजना नंदना के कान में डाल दी।

"ओह, मालती! तुम तो बड़ी होशियार हो! तुम्हारी चाल चलाने के लिए हमारे साथ घर आये मेरा मौसेरा भाई मदद देगा। वह तो नाटकों में काम करनेवाला एक कुशल अभिनेता है!" नंदना ने समझाया।

आधी रात हो गई। सारा गाँव सो गया। मालती ने अपना आंचल सर पर खींच लिया, जानकी के दर्वाजे पर पहुँचकर दस्तक दी और अंधेरे में खड़ी

हो गई। जानकी के पिता ने आकर किवाड़ खोला।

इस पर मालती ने अपना कंठस्वर बदलकर पूछा–"जानकी ने मुझसे यह पूछने के लिए भेजा है कि क्या वह अब घर लौट सकती है?"

जानकी की माँ बाहर निकलते बोली–"यह तो एक बावरी लड़की ठहरी! मैंने उसे पहले ही समझाया था कि मालती के यहाँ से चले जाने तक वह घर न लौटे! उससे कह दो कि उसे कब घर लौटना है, हम्हीं मौक़ा देख खबर कर देंगे, पर तुमने यह नहीं बताया कि आखिर तुम हो कौन?"

"मैं मालती हूँ।" यों कहते मालती रोशनी में आकर खड़ी हो गई। इस पर जानकी के माँ-बाप अवाक् रह गये। उनके चेहरे पीले पड़ गये।

इसके बाद अंधेरे में मालती के पीछे सिपाही के वेष में स्थित नंदना का मौसेरा भाई आगे बढ़कर कर्कश स्वर में बोला–"अब तुम्हारी पोल खुल गई। तुम तीनों मजे से जेल की चीखचों को गिनते कारागार में बैठ जाओगे।"

सिपाही को देख जानकी के माँ-बाप थर-थर कांप उठे और गद्गद् कंठ में बोले–"मालती, हमें माफ़ कर दो। हमने तुम को दगा दिया है। आज तक हमने इज्जत के साथ अपने दिन काटे। हमें इस अपमान से बचाओ। तुम्हारे गहने तुम्हें अभी वापस ला देते हैं।"

मालती ने साफ़ कह दिया कि उसके गहनों के साथ अड़ोस-पड़ोस के घरों से चुराई गई सारी चीज़ें लाकर सौंप न दे तो वह उन्हें माफ़ नहीं कर सकती।

जानकी के माँ-बाप ने मिनटों में जानकी को बुला भेजा, मालती के गहनों के साथ अन्य घरों से चुराई गई सारी चीज़ें सब को सौंप दीं, तब सवेरा होने के पहले ही मकान खाली करके वे लोग कहीं चले गये।

इस पर नंदना ने कहा–"मालती, तुमने हमें पड़ोसी झंझट से बचाया। इस खुशी में मैं तुम्हें बढ़िया दावत दूंगी।"

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां फ़रवरी १९८० के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

D. N. Shirke

★

Srivatsa S. Vati

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ दिसंबर १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अक्तूबर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : इसकी हँसी है विकराल!

द्वितीय फोटो : बालक भय से है बेहाल!!

प्रेषक: श्री एस. अतिबल, डी ३३/८१ खालिसपुरा, वाराणसी - २२१००१

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adopting them in any manner will be dealt with according to law.

Asoka
Glucose
MILK BISCUITS
Asoka

हर पल
असोका
के साथ

एक नयी ताजगी का अनुभव.
जिन्दगी का भरपूर मजा.
कुरकुरे, असोका ग्लूकोज मिल्क बिस्कुटों
का आनन्द लीजिए.
विद्युतीय नियन्त्रण से पूर्ण आधुनिक जर्मन
प्लान्ट में स्वास्थ्यकारी गुणों से निर्मित.
दिलकश और ताजी शक्ति से परिपूर्ण
आज ही अपने परिवार के लिए एक पैकिट खरीदिये!

असोका बिस्किट्स हैदराबाद आ. प्र.

असोका क्रेस्पो तथा क्रेस्पोक्रेक के निर्माता

लाल साइकिल पे हो के सवार,
स्कूल आ पहुँचा बचत कुमार।
ट्रिंग! ट्रिंग!! ट्रिंग!!!

देखी जो उसकी
साइकिल नयी
भोलू हुआ उदास,

"काश इसे
मैं भी ले पाता
पैसे जो होते पास।"

शेर बबर इतने में आया।
आते ही उसने हुकुम सुनाया॥

"नयी साइकिल इधर लाओ
तुम अपनी कक्षा में जाओ"

बोला बचत कुमार,
"दूँगा नहीं मैं अपनी साइकिल
चाहे करो दहाड़, चीख पुकार।
जमा किये हैं मैंने पैसे,
और खरीदा इसको।
ये तो केवल मेरी है
क्यों दूँ और किसी को?"

'कांव' 'कांव' कर शोर मचाया,
कौवे ने सबको पास बुलाया।
बोला "कैसे पकड़ें उसको
और मज़ा लें साइकिल का!"
किया सभी ने शुरू सोचना,
और बनायी एक योजना।

"बचत कुमार जब आयेगा।
लम्बू दौड़ लगायेगा।
बचत कुमार घबरायेगा
तब बक-बक शोर मचायेगा।
पेटूराम रोकेगा रास्ता
टट्टू सिंह तब देगा धक्का।
गिर जायेगा बचत कुमार
होकर हक्का-बक्का।
तब हम सब साइकिल पायेंगे,
मन की मौज मनायेंगे।"

उधर लम्बू ने लम्बी दौड़ लगाई। इधर बचत कुमार ने साइकिल तेज भगाई।
पल में हो गया वह रफूचक्कर, सब देखते रहे हाथ मल-मल कर।

पेड़ पे बैठा तोता डोला,
टें-टें करके एकदम बोला।

"जो बच्चे हैं पैसा बचाते,
वे जीवन को सुखी बनाते।
जो बच्चे हैं पैसा उड़ाते,
आगे चलकर वे पछताते।"

पाठकों से निवेदन

पत्रिका के प्रकाशन का प्रत्येक खर्च आश्चर्यजनक रूप में बढ़ गया है। खासकर काग़ज़ का दाम दुगुने से ज्यादा हो गया है। इस कारण अनेक पत्रिकाओं ने मूल्य बढ़ाये हैं। कुछ पत्रिकाएँ छपाई, साज-सज्जा वगैरह में किफ़ायती बरत रही हैं। लेकिन हमने निश्चय किया कि चन्दामामा में ऐसी किफ़ायती–पृष्ठ संख्या, रंग आदि घटाना–नहीं करनी चाहिए, पर पत्रिका का मूल्य २५ पैसे और बढ़ाकर, प्रत्येक प्रति का मूल्य जनवरी १९८० से रु. १-५० पैसे कर रहे हैं। हमारा विश्वास है कि बहुत समय से चन्दामामा के द्वारा सामना करनेवाली कठिनाइयों को अपनी मानकर, पत्रिका को अपनाकर पाठक महाशय इस परिवर्तन को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करेंगे। हमारे एजेंट महाशयों से भी निवेदन है कि वे भी इस परिवर्तन पर ध्यान देंगे!

—प्रकाशक

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख़ से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे।

आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

यकीन मानिए यह सच है!

२ लिबर्टी लूना कैमरे लीजिए... लेकिन कीमत दूसरे किसी एक कैमरे जितनी दीजिए.

लूना कैमरा, बाज़ार में मिलनेवाले दूसरे किसी भी कैमरे से हूबहू मिलता है. लेकिन आप दूसरे किसी भी एक कैमरे जितनी ही कीमत में २ लूना कैमरे ले सकते हैं.

* एक्रोमॅटिक लेन्स (ग्लास)–स्पष्ट तस्वीरों के लिए.
* मज़बूत एबीएस प्लास्टिक बॉडी.
* 120 रोल फिल्म पर 6 सें.मी. × 6 सें.मी. की 12 तस्वीरें खींचता है.

लूना से आप फ्लॅश तस्वीरें भी खींच सकते हैं!

रात में स्पष्ट तस्वीरें खींचने के लिए आप लूना में कोई भी लिबर्टी इलेक्ट्रॉनिक फ्लॅश लगा सकते हैं.

फोटो इंडिया
97 सरदार पटेल रोड,
सिकन्दराबाद-500 003.

लूना तस्वीर खींचे जानदार!

आज वह सिर पर दो चोटियाँ बाँधे यहाँ-वहाँ उछलकूद करनेवाली छोटी सी बच्ची है. आज वह गुड़ियों के साथ खेलती है. उनके लिए खाना पकाती है. उन्हें खाना खिलाती है लेकिन कल जब उसे बहुत कम बजट में अपना घर चलाना होगा, तब वह क्या करेगी.

जिसतरह आपने उसके भविष्य के लिए बचत की है उसीतरह उसे भी बचत के आसान तरीकों के बारे में बताइये. केनरा बैंक बालक्षेम खाते की मदद से यही छोटी सी बच्ची आगे चलकर

कुशल व मितव्ययी गृहिणी बन जाएगी. रोज़ाना छोटी-मोटी खरीदारी करने के बाद बची हुई रेज़गारी को आकर्षक गुल्लक में डाला जा सकता है और बाद में इसे केनरा बैंक में जमा किया जा सकता है. जिसतरह लहरें अपनेआप आगे बढ़ती चली जाती हैं उसीतरह बालक्षेम खाते में आपका धन बढ़ता ही जाता है. कुछ ही समय में एक अच्छी-खासी रकम जमा देखकर आप हैरान रह जाएंगे. ये वादा है—
केनरा बैंक का।

maa CB 15 Hin-79

राम और श्याम

दूसरी दुनियां का दोस्त

रसीली
प्यारी
मजेदार

पारले

पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली
गोलियां

everest/79/PP/261-hn